राष्ट्र जागरण का शंखनाद

शाश्वत हिन्दू गर्जना

वर्ष : 31 माह : अप्रैल 2024 सहयोग : ₹ 10

जयंती विशेष

समरसता के प्रखर पुंज डॉक्टर द्वय

राष्ट्रोत्थान का अभूतपूर्व अवसर ये मतदान का महापर्व

श्री राममन्दिर से राष्ट्रीय पुनरुत्थान की ओर

प्रस्ताव - अ. भा. प्र. सभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

पौष शुक्ल द्वादशी, युगाब्द 5125 (22 जनवरी 2024) को श्रीरामजन्मभूमि पर श्रीरामलला के विग्रह की भव्य-दिव्य प्राणप्रतिष्ठा विश्व इतिहास का एक अलौकिक एवं स्वर्णिम पृष्ठ है। हिन्दू समाज के सैकड़ों वर्षों के सतत संघर्ष एवं बलिदान, पूज्य संतों और महापुरुषों के मार्गदर्शन में चले राष्ट्रव्यापी आंदोलन तथा समाज के विभिन्न घटकों के सामूहिक संकल्प के परिणामस्वरुप संघर्षकाल के एक दीर्घ अध्याय का सुखद समाधान हुआ। इस पवित्र दिवस को जीवन में साक्षात् देखने के शुभ अवसर के पीछे शोधकर्ताओं, पुरातत्वविदों, विचारकों, विधिवेत्ताओं, संचार माध्यमों, बलिदानी कारसेवकों सहित आंदोलनरत समस्त हिन्दू समाज तथा शासन-प्रशासन का महत्त्वपूर्ण योगदान विशेष उल्लेखनीय है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा इस संघर्ष में जीवन अर्पण करनेवाले सभी हुतात्माओं के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उपर्युक्त सभी के प्रतिकृतज्ञता व्यक्त करती है।

श्रीराममन्दिर में अभिमंत्रित अक्षत वितरण अभियान में समाज के समस्त वर्गों की सक्रिय सहभागिता रही। लाखों रामभक्तों ने सभी नगरों और अधिकांश गाँवों में करोड़ों परिवारों से संपर्क किया। 22 जनवरी 2024 को भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में अद्भुत आयोजन किये गए। गली-गली और गाँव-गाँव में स्वप्रेरणा से निकली शोभायात्राओं, घर-घर में आयोजित दीपोत्सवों तथा लहराती भगवा पताकाओं और मंदिरों-धर्मस्थलों में हुए संकीर्तनों आदि के आयोजनों ने समाज में एक नवीन ऊर्जा का संचार किया।

श्री अयोध्याधाम में प्राणप्रतिष्ठा के दिन देश के धार्मिक, राजनैतिक एवं समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के शीर्ष नेतृत्व तथा सभी मत-पंथ-सम्प्रदाय के पूजनीय संतवृंद की गरिमामयी उपस्थिति थी। यह इस बात की द्योतक है कि श्रीराम के आदर्शों के अनुरूप समरस, सुगठित राष्ट्रजीवन खड़ा करने का वातावरण बन गया है। यह भारत के पुनरुत्थान के गौरवशाली अध्याय के प्रारंभ का संकेत भी है। श्रीरामजन्मभूमि पर रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से परकीयों के शासन और संघर्षकाल में आई आत्मविश्वास की कमी और आत्मविस्मृति से समाज बाहर आ रहा है। सम्पूर्ण समाज हिंदुत्व के भाव से ओतप्रोत होकर अपने 'स्व' को जानने तथा उसके आधार पर जीने के लिए तत्पर हो रहा है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन हमें सामाजिक दायित्वों के प्रति प्रतिबद्ध रहते हुए समाज व राष्ट्र के लिए त्याग करने की प्रेरणा देता है। उनकी शासन पद्धति 'रामराज्य' के नाम से विश्व इतिहास में प्रतिष्ठित हुई, जिसके आदर्श सार्वभौमिक व सार्वकालिक हैं। जीवन मूल्यों का क्षरण, मानवीय संवेदनाओं में आई कमी, विस्तारवाद के कारण बढ़ती हिंसा व क्रूरता आदि चुनौतियों का सामना करने हेतु रामराज्य की संकल्पना सम्पूर्ण विश्व के लिए आज भी अनुकरणीय है।

प्रतिनिधि सभा का यह सुविचारित मत है कि सम्पूर्ण समाज अपने जीवन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के आदर्शों को प्रतिष्ठित करने का संकल्प ले, जिससे राममंदिर के पुनर्निर्माण का उद्देश्य सार्थक होगा। श्रीराम के जीवन मे परिलक्षित त्याग, प्रेम, न्याय, शौर्य, सद्भाव एवं निष्पक्षता आदि धर्म के शाश्वत मूल्यों को आज समाज में पुनः प्रतिष्ठित करना आवश्यक है। सभी प्रकार के परस्पर वैमनस्य और भेदों को समाप्त कर समरसता से युक्त पुरुषार्थी समाज का निर्माण करना ही श्रीराम की वास्तविक आराधना होगी।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा समस्त भारतीयों का आव्हान करती है कि बंधुत्वभाव से युक्त, कर्त्तव्यनिष्ठ, मूल्याधारित और सामाजिक न्याय की सुनिश्चितता करने वाले समर्थ भारत का निर्माण करें, जिसके आधार पर वह एक सर्वकल्याणकारी वैश्विक व्यवस्था का निर्माण करने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर सकेगा। ❑❑❑

✤ वदतु संस्कृतम् ✤

संस्कृत	हिन्दी
एतावत् तु कृतवान्।	इतना तो किया।
दष्टुम् एव न शक्यते।	देख ही नहीं सकते।
तत्रैव कुत्रापि स्यात्।	यहीं कहीं होगा।
यथार्थं वदामि।	सच कहता हूँ।
एवं भवितुम् अर्हति।	ऐसा हो सकता है।

डॉ. मनोज पाण्डेय
प्रांत संगठन मंत्री (संस्कृत भारती)

शाश्वत हिन्दू गर्जना

(मासिक)

महाकौशल प्रांत
वर्ष 31 अंक - 4
अप्रैल 2024
विक्रमाब्द - 2080
युगाब्द - 5125

✤

संपादक
डॉ. किशन कछवाहा

✤

सह-संपादक
डॉ. नुपूर निखिल देशकर

✤

कार्यकारी-संपादक
कृष्ण मुरारी त्रिपाठी 'अटल'

✤

सलाहकार संपादक
डॉ. यतीश जैन
चंद्रशेखर पचौरी

✤

प्रकाशक
नरेन्द्र जैन
विश्व संवाद केन्द्र
महाकौशल न्यास, जबलपुर

✤

सम्पर्क
प्लॉट नं.1, म.नं. 1692
नव आदर्श कॉलोनी,
गढ़ा मार्ग, जबलपुर
फोन-0761-4006608

✤

मुद्रक
ग्रेनेडियर्स प्रिंटिंग प्रेस
जबलपुर
फोन : 0761-2620184

संपादकीय...

राष्ट्रहित सर्वोपरि : राष्ट्रीय विचारों के साथ करें शत-प्रतिशत मतदान

लोकसभा चुनाव 2024 सात चरणों में सम्पन्न होने जा रहे हैं। इस समय प्रत्येक नागरिक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। लोकसभा चुनाव से हम केवल सांसद का ही चुनाव नहीं करते हैं बल्कि देश के भविष्य का निर्धारण करते हैं। क्योंकि यही सांसद मिलकर बहुमत प्राप्त दल के नेता को प्रधानमंत्री के रूप में चुनते हैं। तत्पश्चात कैबिनेट के रूप में पूर्ण सरकार का गठन होता है। यह केन्द्र सरकार ही देश की रक्षा-सुरक्षा, विदेश नीति, नियम-कानून, आर्थिक एवं मौद्रिक नीति, कृषि नीति सहित अन्य सभी निर्णय लेती है। जनकल्याणकारी योजनाएं बनाती है। आन्तरिक शान्ति एवं सुरक्षा के साथ जन-जीवन की उन्नति एवं विकास के लिए विभिन्न कदम उठाती है।

जनता द्वारा चुने के गए सांसदों के आधार पर गठित होने वाली केन्द्र सरकार ही देशव्यापी निर्णयों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार होती है। ऐसे में केन्द्र में एक सशक्त मजबूत एवं दूरदर्शी नेतृत्व का होना - राष्ट्र के सर्वांगीण विकास की गारंटी मानी जाती है। सक्षम- सशक्त-दूरदर्शी नेतृत्व केवल राष्ट्रव्यापी निर्णय ही नहीं लेता है बल्कि देश की अन्तरराष्ट्रीय छवि सहित विदेशी साख को बढ़ाने में विशेष योगदान देता है। निवेश से लेकर 'अन्तरराष्ट्रीय डायस्पोरा', प्रवासी भारतीय नीति व मजबूत कूटनीतिक सम्बन्धों में मजबूत केन्द्र सरकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वहीं यदि केन्द्र सरकार का नेतृत्व कमजोर या ढुलमुल हुआ तो कोई भी देश आसानी से हमें अनसुना कर सकता है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों में किसी न किसी ढंग से हस्तक्षेप कर हमारी भूमिका को कम कर सकता है।

अतएव लोकसभा चुनाव के समय मतदान करने से पूर्व सभी को राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों को ध्यान में रखना चाहिए। राष्ट्रीय एकात्मता, सामाजिक समरसता, जनकल्याण एवं भारत के 'स्व' पर अनिवार्यतः विचार-विमर्श करना चाहिए। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारा एक-एक वोट हमारे देश का भविष्य बनाने वाला है। यह कभी न सोचें कि मेरे एक वोट से क्या होगा? यह ध्यान रखें कि- आपका एक वोट देश के प्रधानमन्त्री को चुनने वाला है। देश की सरकार बनाने वाला है। इसीलिए मतदान के दिन सारे काम छोड़कर शत-प्रतिशत मतदान करने जाना है। लोकतन्त्र के इस महापर्व में युवा जहां राष्ट्रहित के लिए शत प्रतिशत मतदान का संकल्प लेकर जनजागरण करें। वहीं मातृ-शक्तियों, बड़े-बुजुर्गों सभी को मतदान के लिए प्रेरित करें। क्योंकि पांच वर्षों बाद आया लोकतन्त्र का यह महापर्व ही राष्ट्र के भविष्य की सुनहरी तस्वीर गढ़ने वाला है।

इस समय विभिन्न राजनीतिक दल एवं उनके नेतागण आपसे समर्थन मांगने आ ही रहे होंगे। ऐसे समय में उनके पांच वर्षों के कार्यकलापों पर चर्चा करें। राष्ट्रीय एकात्मता, अखण्डता, समरसता और जनकल्याण के लिए उनके दल व उनकी नीति व नीयत क्या है? इन सब पर व्यापक विचार-विमर्श करें। यह देखें कि जब संसद से देश की एकात्मता, अखण्डता, समरसता और जनकल्याण के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए जा रहे थे। उस समय इन राजनेताओं व उनके दलों की कैसी भूमिका थी? चुनाव के समय निष्पक्ष रूप से यह आंकलन करें कि- देश की विदेश नीति, रक्षा नीति एवं सर्वांगीण विकास के लिए किए गए निर्णयों के समय देश के विरोध में कौन खड़ा था? चाहे बात भारत के 'स्व' की हो याकि बात भारत के गौरव, भारत की संस्कृति एवं परम्पराओं के संरक्षण सम्वर्धन की हो। यह देखें कि- इन सब मुद्दों पर किस राजनीतिक दल व उसके नेताओं ने वास्तव में काम किया है। साथ ही यह भी देखें कि इन निर्णयों के विरोध में-भारत विरोध में हमेशा कौन खड़ा रहा है? चुनाव के समय किसी भी प्रकार के प्रलोभन-भय या लालच से बचें। जाति-पाति, वर्ग-समुदाय आदि की विभाजनकारी मानसिकता से ऊपर उठकर मतदान करें। लोकतन्त्र के इस महायज्ञ में मतदान करते समय राष्ट्रहित सर्वोपरि का मंत्र लेकर राष्ट्रीय विचारों के लिए मतदान करें। स्वर्णिम और विकसित भारत में अपनी वोट रुपी आहुति समर्पित करें। और नया भारत गढ़ें। ❑❑❑

चौमुखनाथ मंदिर परिसर की खुदाई में मिला सबसे प्राचीन शिवलिंग

पन्ना। चौमुखनाथ मंदिर परिसर की खुदाई में मिला सबसे प्राचीन शिवलिंग- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण कर रहा सर्वे जिले को हीरों झीलों और मंदिरों का जिला कहा जाता है। यहां सदियों पुराने मंदिर स्थित हैं। कुछ मंदिर आज भी स्थापित है तो कुछ जमीन के अंदर दबे हुए हैं।इसकी खुदाई एएसआई विभाग कर रहा है।

जिले के नचना कुठारा गांव में स्तिथ चौमुखनाथ मंदिर परिसर में स्तिथ टीलों की खुदाई में सबसे प्राचीन मंदिर के अवशेष और शिवलिंग मिला है। जो पहली से पांचवी सदी के बीच के हो सकते हैं। प्राचीन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की टीम यहां खुदाई कर रही है। जिसमे और भी प्राचीन मंदिर व प्रतिमाएं मिलने की संभावना जताई जा रही है। जानकारी के अनुसारभारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के द्वारा पन्ना जिले के नचना कुठारा गांव में स्थित पांचवी सदी के प्राचीन मंदिर चौमुखनाथ मंदिर परिसर में 8 टीलों को चिन्हित किया गया था। जिनमें प्राचीन मंदिर व प्रतिमाओं के मिलने की संभावना 4 मार्च से खुदाई का शुरू किया गया है। 15 दिन की खुदाई में दो टीलों की खुदाई हो रही है।

इसमें शिव मंदिर के अवशेष और एक शिवलिंग मिला है। जानकारों का मानना है कि जब यहां स्थित पार्वती मंदिर गुप्कालीन पांचवी सदी के मौजूद है। तो खुदाई में मिला शिवलिंग व मंदिर के अवशो देश के सबसे प्राचीन यानी पहली सदी से पांचवी सदी के बीच के हो सकते हैं।

अभी और प्रतिमा, अवशेष मिलने की उम्मीद जिला पुरातत्व, पर्यटन और संस्कृति परिषद के सदस्य मुकेश पाण्डेय ने बताया कि नचना कुठार गांव में स्थित चौमुखनाथ मंदिर परिसर में स्थित पार्वती मंदिर पांचवी सदी का है। पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग वर्तमान में परिसर में खुदाई करा रहा है, जहां 8 टीले चिन्हित किए गए हैं। इसमें अनुमान लगाया जा रहा है कि पांचवी सदी से भी पहले के शिवलिंग और मंदिर के अवशेष मिले हैं। अभी खुदाई का कार्य चल रहा है और उम्मीद जताई जा रही है कि यहां मंदिरों के अवशेष या प्रतिमाएं मिल सकती हैं।

एसडीएम नोडल अधिकारी नियुक्त पन्ना कलेक्टर सुरेश कुमार ने कहा कि इस संबंध में ASI के अधिकारियों से मेरी चर्चा हुई है। दूसरी से पांचवी सदी के मंदिर और अवशेष मिलने की वहां संभावना जताई गई है। उन्होंने हमसे सहयोग मांगा था, जिसको लेकर हमने गुनौर एसडीएम को नोडल अधिकारी के तौर पर नियुक्त किया है। उम्मीद है कि एएसआई की टीम को वहां प्राचीन मंदिर या स्मारक मिलेंगे।

सतना की बेटी ने रूस में जीता गोल्ड मेडल: इंटरनेशनल वुशु स्टार चैम्पियनशिप के फाइनल में रूसी खिलाड़ी को हराया

मध्य प्रदेश के सतना शहर की रहने वाली वैष्णवी ने रूस के मॉस्को में हुए इंटरनेशनल वुशु स्टार चैम्पियनशिप के 48 किलोग्राम वर्ग में गोल्ड मेडल जीता है। वैष्णवी की इस कामयाबी पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी ट्वीट कर बधाई दी है।

फाइनल मुकाबले में वैष्णवी ने रूस के खिलाड़ी को उसके घर में ही मात देकर गोल्ड मेडल जीता है। इससे पहले उन्होंने सेमीफाइनल में अफगानिस्तान की वुशु प्लेयर को हराकर फाइनल में प्रवेश किया था। मॉस्को में हुई इस प्रतियोगिता में कुल 12 देशों के वुशु खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया था। इसमें मध्यप्रदेश के 5 खिलाड़ी स्पर्धा में शामिल हुए थे। इन सब के बीच सतना के रामपुर की रहने वाली वैष्णवी ने अपनी प्रतिभा और शानदार प्रदर्शन के बूते खिताब जीत लिया। इस जीत के साथ वैष्णवी ने देश- प्रदेश के साथ-साथ सतना जिले का भी नाम रोशन किया है।

इससे पहले साल 2019 में हुए जूनियर नेशनल चैम्पियनशिप में भी वैष्णवी गोल्ड मेडल जीत चुकी हैं। वैष्णवी के पिता विनोद त्रिपाठी मध्य प्रदेश पुलिस में कार्यरत हैं। उनकी बड़ी बहन गीतांजलि एक वुशु प्लेयर हैं और वेएक इंटरनेशनल प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल जीत चुकी हैं। वैष्णवी बताती है कि उनकी बड़ी बहन के चलते ही उनका रुझान वुशु की तरफ बढा । बेटियों की रुचि देख कर पिता ने भी उनका भरपूर साथ दिया। अब बेटियों ने भी गोल्ड मेडल जीतकर पिता को गौरवान्वित किया है।

जन्म कल्याण पर्व-21 अप्रैल भगवान महावीर

2550वां निर्वाणोत्सव पर्व भगवान महावीर स्वामी का देशभर में मनाया जा रहा है। जैन धर्म के अनुसार भगवान महावीर चौंबीसवें (24वें) तीर्थंकर थे। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ नाथ जैन धर्म के प्रवर्तक माने जाते हैं। भगवान महावीर का जन्म करीब ढाई हजार वर्ष पहले (ईसा से 540वर्ष पूर्व), वैशाली गणराज्य के कुण्डग्राम में अयोध्या इक्ष्वाकुवंशी क्षत्रिय परिवार हुआ था। तीस वर्ष की आयु में महावीर ने संसार से विरक्त होकर राज वैभव त्याग दिया और संन्यास धारण कर आत्मकल्याण के पथ पर निकल गये। 12वर्षो की कठिन तपस्या के बाद उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ जिसके पश्चात् उन्होंने समवशरण में ज्ञान प्रसारित किया। 72 वर्ष की आयु में उन्हें पावापुरी से मोक्ष की प्राप्ति हुई। इस दौरान महावीर स्वामी के कई अनुयायी बने जिसमें उस समय के प्रमुख राजा बिम्बिसार, कुणिक और चेटक भी शामिल थे। जैन समाज द्वारा महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक को महावीर-जयंती तथा उनके मोक्ष दिवस को दीपावली के रूप में धूम धाम से मनाया जाता है।

जैन ग्रन्थों के अनुसार समय समय पर धर्म तीर्थ के प्रवर्तन के लिए तीर्थंकरों का जन्म होता है, जो सभी जीवों को आत्मिक सुख प्राप्ति का उपाय बताते है। तीर्थंकरों की संख्या चौबीस ही कही गयी है। भगवान महावीर वर्तमान अवसर्पिणी काल की चौबीसी के अंतिम तीर्थंकर थे और ऋषभदेव पहले। हिंसा, पशुबलि, जात-पात का भेद-भाव जिस युग में बढ़ गया, उसी युग में भगवान महावीर का जन्म हुआ। उन्होंने दुनिया को सत्य, अहिंसा का पाठ पढ़ाया। तीर्थंकर महावीर स्वामी ने अहिंसा को सबसे उच्चतम नैतिक गुण बताया। उन्होंने दुनिया को जैन धर्म के पंचशील सिद्धांत बताए, जो है– अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अचौर्य (अस्तेय), ब्रह्मचर्य। उन्होंने अनेकांतवाद, स्यादवाद और अपरिग्रह जैसे अद्‌भुत सिद्धान्त दिए। महावीर के सर्वोदयी तीर्थों में क्षेत्र, काल, समय या जाति की सीमाएँ नहीं थीं। भगवान महावीर का आत्म धर्म जगत की प्रत्येक आत्मा के लिए समान था। दुनिया की सभी आत्मा एक-सी हैं इसलिए हम दूसरों के प्रति वही विचार एवं व्यवहार रखें जो हमें स्वयं को पसन्द हो। यही महावीर का (जियो और जीने दो) का सिद्धान्त है। जैन ग्रन्थों के अनुसार केवल ज्ञान प्राप्ति के बाद, भगवान महावीर ने उपदेश दिया। उनके गणधर (मुख्य शिष्य) थे जिनमें प्रथम इंद्रभूति थे। जैन ग्रन्थ, उत्तरपुराण के अनुसार महावीर स्वामी ने समवसरण में जीव आदि सात तत्त्व, छह द्रव्य, संसार और मोक्ष के कारण तथा उनके फल का नय आदि उपायों से वर्णन किया था। ❑❑❑

महत्वपूर्ण दिवस माह अप्रैल

5 अप्रैल- माँ कर्मादेवी जयंती
7 अप्रैल- विश्वस्वास्थ्य दिवस
9 अप्रैल- विक्रम नववर्ष/वर्ष प्रतिपदा
9 अप्रैल- गुढ़ी पड़वा, चैत्र नवरात्र
9 अप्रैल- डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार जयंती
10 अप्रैल- चेटीचण्ड जयंती/भगवान झूलेलाल जयंती
11 अप्रैल- गणगौर, तीज
11 अप्रैल- महात्मा ज्योतिबाफुले जयंती
12 अप्रैल- श्रीराणासांगा जयंती
13 अप्रैल- जलियांवाला बाग नरसंहार दिवस
13 अप्रैल- रामराज्योत्सव/गुहराजनिषाद जयंती
14 अप्रैल- डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर जयंती
17 अप्रैल- श्रीरामनवमी
17 अप्रैल- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन पुण्यतिथि
21 अप्रैल- महावीर जयंती
22 अप्रैल- विश्वपृथ्वी दिवस
23 अप्रैल- भगवान हनुमान प्राकट्‌योत्सव
25 अप्रैल- संत सूरदास जयंती
26 अप्रैल- रामानुचार्य जयंती
28 अप्रैल- गुरू तेगबहादुर जयंती
28 अप्रैल- श्रीमंत पेशवाबाजीराव प्रथम
30 अप्रैल- गुरू अर्जुनदेव जयंती

❑❑❑

प्रिय पाठकगण,

``शाश्वत हिन्दू गर्जना'' पत्रिका के सम्बंध में अपने सुझाव एवं विचार कृपया इस व्हाट्सएप नम्बर पर अपना पूर्ण परिचय, पता एवं पासपोर्ट साइज फोटो सहित प्रेषित करें।

श्याम साहू - 9522525363

सावधानी : जल संकट की चेतावनी

-हेमेन्द्र क्षीरसागर

हमारी पृथ्वी का एक तिहाई हिस्सा जल से घिरा हुआ है। इसके बाद भी जगह जगह पर लोग पानी की समस्या से परेशान हैं। कई जगह पानी की पहुंच इतनी ज्यादा है कि लोग उसे आंख मूंदकर बर्बाद करते हैं तो कई जगह प्यास बुझाने के लिए ही पानी उपलब्ध नहीं है। यहीं कारण है कि दुनिया के अधिकांश लोगों को जल संकट का सामना करना पड़ता है।

फलस्वरूप, पूरे विश्व में साफ पानी का धनी देश ब्राजील को माना जाता है। ब्राजील में 8647 अरब क्यूबिक मीटर पानी उपलब्ध है। विश्व में पानी की उपलब्धता को लेकर भारत का आठवां स्थान है। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत विश्व के कुल भूजल का 24 फीसदी इस्तेमाल करता है। कई महानगरों में जिस तरह से जल स्तर कम हो रहा है उससे भविष्य में संकट और गहरा हो सकता है। ध्यान देने वाली बात ये है कि धरती का करीब तीन चौथाई हिस्सा पानी पानी से भरा हुआ है, लेकिन इसमें से सिर्फ तीन प्रतिशत हिस्सा ही पीने योग्य है। वही इजरायल जैसा अल्प वर्षा वाला देश जल संधारण का सबसे बड़ा उदाहरण है। जिससे सामान्य वर्षा वाले देशों को जल संरक्षण और संवर्धन की सीख लेने की निहायत जरूरत है।

ध्यातव्य है कि, पृथ्वी का 71 प्रतिशत हिस्सा पानी से ढका पृथ्वी का 71 प्रतिशत भाग जल से घिरा हुआ है, 29 फीसदी भाग पर स्थल है। इस 29 प्रतिशत क्षेत्र पर ही इंसान और दूसरे प्राणी रहते हैं। कुल पानी का लगभग 97 फीसदी पानी समुद्र में पाया जाता है, लेकिन खारा होने के कारण इस पानी को पीने के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। सिर्फ तीन प्रतिशत पानी ही पीने लायक है, जो ग्लेशियर, नदी, तालाबों में पाया जाता है। इस तीन प्रतिशत पानी में भी 2.4 प्रतिशत हिस्सा ग्लेशियरों, दक्षिणी ध्रुवों पर जमा है, जबकि बचा हुआ 0.6 प्रतिशत पानी नदी, तालाबों, झीलों और कुओं में है। जिसका हम उपयोग कर सकते हैं, इसलिए हमें जल को बचाना चाहिए। इसकी एक बूंद बूंद बहुत कीमती है, इसे व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए।

वस्तुतः पानी हमारे दैनिक के जीवन के लिए महत्वपूर्ण है और पृथ्वी पर हमारा अस्तित्व इसी से है। पृथ्वी के कुल पानी का लगभग ढाई प्रतिशत ही मीठा पानी है और बढ़ती जनसँख्या और पानी के व्यर्थ उपयोग के कारण मीठे पानी की कमीं अब नजर आने लगी है। जल संकट एक ऐसी स्थिति है जहां किसी क्षेत्र के भीतर उपलब्ध पीने योग्य, अप्रदूषित पानी उस क्षेत्र की मांग से कम हो जाता है। भूजल पृथ्वी पर मीठे पानी का सबसे बड़ा स्रोत है जो हमारे जीवन को समृद्ध करता है। हालांकि, सतह के नीचे संग्रहीत होने के कारण, इसे अक्सर अनदेखा किया जाता है। जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन बदतर होता जाएगा, भूजल अधिक से अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगा। हमें इस बहुमूल्य संसाधन को स्थायी रूप से प्रबंधित करने के लिए मिलकर काम करने की आवश्यकता है।

पानी गए न ऊबरे मोती मानुष चून। वर्षों पुराना यह दोहा कभी नीतिवाद से प्रेरित लगता था, लेकिन आज यह सच साबित होता दिख रहा है। बढ़ते जल संकट को लेकर पर्यावरणविद् सुंदरलाल बहुगुणा का यह कहना था कि, अगला विश्वयुद्ध पानी को लेकर लड़ा जाएगा। भविष्य में जल के भयावह संकट की चेतावनी दी थी! यह हूबहू चरितार्थ हो रही है। सावधानी, जल संकट से बचने का उपाय हमें सतर्क और सजग रहकर हर हाल खोजना होगा। अन्यथा जन-जीवन का अस्तित्व ही समाप्त। आइए संकट के समय हम सब मिलकर जल को बचाएं, जल हमारे जीवन को बचाएगा।

❑❑❑

बालाघाट में कन्वर्जन के विरोध में विहिप ने सौंपा ज्ञापन

बालाघाट जिला इसाई धर्म विस्तार की दृष्टि से ईसाई मिशनरियों का एक बड़ा केन्द्र है। बीते समय भी, देश के एक हिस्से में धर्म परिवर्तन के ईसाई मिशनरी के एक मामले में खुलासे के तार जिले से जुड़े थे।

मामला जिले के लालबर्रा थाना क्षेत्र अंतर्गत खारी का है। यहां हिन्दू धर्म के कुछ युवाओं को ईसाई मिशनरी ने धर्म परिवर्तन का प्रलोभन और रोगों से मुक्ति का दावा कर उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित किया। इसकी शिकायत हिन्दुवादी संगठन विहिप के साथ युवाओं ने प्रशासन और पुलिस की है। बताया जाता है कि 19 और 20 मार्च को लालबर्रा के खारी में एक बड़ी चंगाई सभा ईसाई मिशनरी की आयोजित की जा रही है। जिसके बाद विहिप अध्यक्ष यज्ञेश लालु चावड़ा के नेतृत्व में हिन्दुवादी संगठनों के पदाधिकारियों और लालबर्रा के खारी निवासी युवकों आयोजित चंगाई सभा को रद्द किए जाने और धर्म परिवर्तन के लिए लोगों के घर-घर जाकर उन्हें भ्रमित करने वालों के खिलाफ कार्रवाई किए जाने की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा।

❑❑❑

40 वर्ष बाद अंतरिक्ष में पहुँचेंगे - भारतीय अंतरिक्ष यात्री

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 27 फरवरी को भारत के पहले मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन गगनयान के लिए चुने गए चार अंतरिक्ष यात्रियोंके सनाम सार्वजनिक किए। इन्हें "भारत का सम्मान" बताया। केरल के थुंबा स्थित विक्रम साराभाई स्पेस सेन्टर में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "ये मात्र 4 नाम या 4 इंसान नहीं हैं। ये वो चार शक्तियाँ हैं, जो 140 करोड़ भारतीयों की आकांक्षाओं को अंतरिक्ष तक ले जाने वाली हैं। 40 साल बाद कोई भारतीय अंतरिक्ष में जा रहा है, लेकिन इस बार समय भी हमारा है, काउंटडाउन भी हमारा है और रॉकेट भी हमारा है।" ज्ञात हो, देश के पहले अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा ने 1984 में अंतरिक्ष की यात्रा की थी।

चारों अंतरिक्ष यात्रियों ने रूस के यूरी गागरिन कॉस्मोनॉट सेन्टर में प्रशिक्षण ली है। राकेश शर्मा ने भी यहीं प्रशिक्षण ली थी। गगनयान मिशन में तीन यात्रियों को 2025 में 400 किमी की निचली कक्षा में भेजा जाएगा। 3 दिन रहकर वापसी करेंगे। गगनयान मिशन की लागत 9000 करोड़ रूपये है। हमारे गर्व के पंख-प्रधानमंत्री मोदी ने चारों अंतरिक्ष यात्रियों के परिधान पर सुनहरे पंखों की आकृति वाला एस्ट्रोनॉट विंग भी लगाया।

ग्रुप कैप्टन प्रशान्त बालकृष्णन नायर-1976 में केरल में जन्म। एनडीए में बेस्ट ऑल रसाउंड कैडेट के लिए "स्वॉर्ड ऑफ आनर" मिला। 1999 में वायुसेना से जुड़े। गगनयान के टीम लीडर। मलयालम एक्ट्रेस लीना ने कहा है कि प्रशान्त उनके पति हैं।

ग्रुप कैप्टन अजीतकृष्णन- 1982 में चेन्नई (तमिलनाडु) में जन्म। "स्वॉर्ड ऑफ आनर" और राष्ट्रपति के गोल्ड मेडल से पुरस्कृत किये जा चुके। एनडीए के बाद 2003 में वायुसेना से जुड़े।

ग्रुप कैप्टन अंगद प्रताप-1982 में प्रयागराज में जन्म। नेशनल डिफेंस एकेडमी के कैडेट अंगद 2004 में एयरफोर्स से बतौर फाइटर पालयट जुड़े। फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर हैं।

विंग कमांडर शुभांशु शुक्ला-1985 में यूपी के लखनऊ में जन्म। एनडीए के कैडेट शुभांशु 2006 में वायुसेना से जुड़े। फाइटर कॉम्बेट लीडर और टेस्ट पायलट हैं। ये चार यात्री हैं।

❑❑❑

1 लाख 9 हजार रामभक्तों के चरण पड़े शबरी पंडाल में

हरे कृष्णा आश्रम भेड़ाघाट द्वारा संचालित चलित प्रसादम सेवा के द्वारा अयोध्या धाम में 11 मार्च से 20 मार्च तक शाबरी भंडारा का आयोजन किया गया शबरी पंडाल में नर्मदा मैया एवं बड़ी खेरमाई माता की प्रतिदिन सुबह शाम महाआरती होती थी।

हरे कृष्णा आश्रम भेड़ाघाट के संस्थापक स्वामी रामचंद्र दास जी महाराज श्रीमती सावित्री देवी अग्रवाल माताजी के सानिध्य में अयोध्या में 10 दिन में 1 लाख 9 हजार से अधिक राम भक्तो ने सुबह की चाय दोपहर का भोजन शाम का नाश्ता चाय एवं रात का भोजन जबलपुर के शबरी भंडारा पंडाल में पाया।

भोजन बनाने वाले परोसने वाले बर्तन साफ करने वाले 80 सेवादारो ने अदभुत मेहनत की पूरे 10 दिन तक किसी भी प्रकार डिस्पोजल का उपयोग नहीं किया गया। ट्रस्ट के अध्यक्ष शरद अग्रवाल ने बताया यह भंडारा का पुण्य लाभ संस्कारधानी वासियो को मिले हम यह जबलपुर वासियों को समर्पित करते है।

शबरी भंडारा अयोध्या धाम में 11 दिन तक लगातार सेवाधारियों ने बहुत मेहनत की आज जमुना सभागृह गोल बाजार में भावुक क्षण में भगवान राम का चित्र अंग वस्त्र देकर सम्मान राशि प्रदान कर विदा किया।

❑❑❑

अमृत वचन

" समरसता के बिना समता स्थायी नहीं हो सकती और दोनों के अभाव में राष्ट्रीयता की कल्पना भी नहीं की जा सकती।"

-डॉ.केशवराव बलिराम हेडगेवार

सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय विचारों के प्रखर पुंज डॉक्टर द्वय

भारत भूमि ने अपनी कोख से समय-समय पर ऐसे-ऐसे रत्न उत्पन्न किए हैं जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से समाज जीवन में एक गहरी अमिट छाप छोड़ी है। रत्नगर्भा भारत माता के ऐसे ही दो महान सपूत- एक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक, प्रथम सरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार और दूसरे- संविधान निर्माण की प्रारुप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर हैं। एक को भारतीय समाज आदर एवं श्रध्दा के साथ डॉक्टर जी के रूप में स्मरण करता है तो दूजे को बाबासाहेब के रूप में। ये महापुरुष द्वय सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय विचारों के ऐसे प्रखर पुंज हैं जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। डॉक्टर जी जहां चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि को तदनुसार 1 अप्रैल 1889 को जन्मे वहीं बाबासाहेब अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को हुआ। अपने कार्यों एवं विचारों से क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने वाले इन दोनों महापुरुषों ने समाज जीवन के समक्ष अनेकानेक आदर्श सौंपे हैं।

जन्मजात राष्ट्रभक्त डॉक्टर जी 'अखण्ड भारत' के लिए कृतसंकल्पित थे। स्वतंत्रता आंदोलन के समय जब वे कांग्रेस में थे तो उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। आंदोलन के दौरान अंग्रेजों के विरुद्ध भाषण देते हुए वर्ष 1921 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और एक वर्ष के कारावास की सजा दी गई। आगे चलकर जब उन्होंने विजयादशमी की तिथि को सन् 1925 में संघ की स्थापना की। उस समय वे हिन्दू समाज को संगठित कर राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए तैयार कर रहे थे। उन्होंने घोषणा की थी ''हमारा उद्देश्य हिन्दू राष्ट्र की पूर्ण स्वतंत्रता है, संघ का निर्माण इसी महान लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए हुआ है।''

उसी समय संघ की शाखा में सभी स्वयंसेवक यह प्रतिज्ञा लेते थे कि- **''मैं अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए तन-मन-धन पूर्वक आजन्म और प्रामाणिकता से प्रयत्नरत रहने का संकल्प लेता हूं।''**

इस प्रकार डॉक्टर जी अखण्ड भारत की संकल्पना को लेकर तपस्वी स्वयंसेवकों को तैयार कर समाज को संगठित कर रहे थे। इसी प्रकार अखंड भारत को लेकर डॉ. अम्बेडकर के भी विचार सुस्पष्ट थे। वे किसी भी स्थिति में भारत विभाजन के पक्षधर नहीं थे। पाकिस्तान एंड पार्टिशन ऑफ इंडिया पुस्तक में उन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों को लेकर सविस्तार लिखा है। मुस्लिम मानसिकता और इस्लामिक ब्रदरहुड पर कटुसत्य उद्घाटित किया है। साथ ही विभाजन को लेकर उन्होंने जहां- जिन्ना को लताड़ा वहीं विभाजन पर कांग्रेस सहित गांधी और नेहरू को भी कठघरे में खड़ा किया। भारत विभाजन को स्वीकार करने को लेकर उन्होंने गसे कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति बताया था।

डॉक्टर हेडगेवार और डॉ. अम्बेडकर दोनों आजीवन सामाजिक समरसता को मूर्तरूप देने में लगे रहे। सामाजिक समरसता को लेकर दोनों का पुणे में चर्चा-सम्वाद भी हुआ था। तत्पश्चात बाबासाहब डॉ. अम्बेडकर संघ कार्यक्रम में भी आए थे। उस दौरान उनके बीच हुई बातचीत को साळुके जी ने अपनी डायरी में उल्लेखित भी किया था। संघ के स्वयंसेवकों द्वारा प्रतिदिन गाए जाने वाले एकात्मता स्त्रोत में भी महापुरुषों के पुण्यस्मरण में ''ठक्करो भीमरावश्च फुले नारायणो गुरुः'' के रूप में बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर का स्मरण किया जाता है।

पद्मश्री से सम्मानित वरिष्ठ चिंतक विचारक रमेश पतंगे डॉ. अम्बेडकर और डॉ. हेडगेवार के सामाजिक समरसता के लिए किए कार्यों के अन्तर्सम्बन्धों पर महत्वपूर्ण विचार रखते हैं। उनके अनुसार- ''डॉ. अम्बेडकर का लक्ष्य था हिंदू समाज में व्याप्त अस्पृश्यता, छुआछूत, जाति-पाति आदि बुराइयों को खत्म करना। इन बुराइयों को खत्म किए बिना देश बड़ा नहीं हो सकता और समाज शक्तिशाली भी नहीं हो सकता। उन्होंने धार्मिक सुधार एवं सामाजिक सुधार के जरिए समता प्राप्त करने के लिए आजीवन संघर्ष किया। नागरिकों की स्वतंत्रता एवं समता पर उन्होंने अधिक बल दिया। हमारा संविधान हमें यह अधिकार देता है। लेकिन केवल कानून बनाने से ऐसा होना संभव नहीं है। यह समाज में स्वाभाविक रूप से आनी चाहिए। इसके लिए सभी में बंधुत्व की भावना आनी चाहिए। यह सब डॉ. अम्बेडकर ने कहा, लेकिन कैसे आनी चाहिए इसका चिंतन, विचार, क्रिया उन्होंने नहीं बताई। मेरे अध्ययन व आंकलन के अनुसार- सामाजिक समरसता का सिद्धांत डॉ. अम्बेडकर ने दिया और डॉ. हेडगेवार ने उसे यथार्थ में कर दिखाया। इसमें दोनों की एक दूसरे से तुलना नहीं करनी चाहिए और न ही उनमें समानता की बात करनी चाहिए। दोनों का कार्यक्षेत्र अलग था। अपने-अपने कार्यों के आधार पर दोनों ही महापुरूष हैं। डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने एक ऐसा तंत्र शाखा के माध्यम से स्थापित किया है कि ऑपरेशन भी हो जाता है, जख्म भी भर जाता, जख्म के निशान तक दिखाई नहीं देते और मरीज को पता भी नहीं चलता है। उक्त सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए अनेक महापुरूषों ने बड़ा संघर्ष व प्रयत्न किया। बावजूद इसमें वे शत-प्रतिशत सफल नहीं हुए। लेकिन दूरद्रष्टा डॉ. हेडगेवार ने सहजता से परिवर्तन कर दिया और समाज व देश के लिए वे आदर्श बने। इसलिए संघ में कहीं भी जाति-पाति, छूआछूत और अस्पृश्यता नहीं है।''

❑❑❑

गुरु अर्जुन देव महाराज

गुरु अर्जुन देव का जन्म सिख धर्म के चौथे गुरु, गुरु रामदासजी व माता भानीजी के घर वैशाख वदी 7, (संवत 1620 में 15 अप्रैल 1563) को गोइंदवाल (अमृतसर) में हुआ था। श्री गुरु अर्जन देव साहिब सिख धर्म के 5वें गुरु है। वे शिरोमणि, सर्वधर्म समभाव के प्रखर स्थम्भ होने के साथ-साथ मानवीय आदर्शों को बनाए रखने के लिए आत्म बलिदान करने वाले एक महान आत्मा थे।

गुरु अर्जुन देव जी की निर्मल प्रवृत्ति, सहृदयता, कर्तव्यनिष्ठता तथा धार्मिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण भावना को देखते हुए गुरु रामदासजी ने 1581 में पांचवें गुरु के रूप में उन्हें गुरु गद्दी पर सुशोभित किया।

इस दौरान उन्होंने गुरुग्रंथ साहिब का संपादन किया, जो मानव जाति को सबसे बड़ी देन है। संपूर्ण मानवता में धार्मिक सौहार्द पैदा करने के लिए अपने पूर्ववर्ती गुरुओं की वाणी को जगह-जगह से एकत्र कर उसे धार्मिक ग्रंथ में बांटकर परिष्कृत किया। गुरुजी ने स्वयं की उच्चारित 30 रागों में 2,218 शब्दों को भी श्री गुरुग्रंथ साहिब में दर्ज किया है। एक समय की बात है। उन दिनों बाला और कृष्णा पंडित सुंदरकथा करके लोगों को खुश किया करते थे और सबके मन को शांति प्रदान करते थे। एक दिन वे गुरु अर्जुन देव के दरबार में उपस्थित हुए और प्रार्थना करने लगे महाराज...! हमारे मन में शांति नहीं है। आप ऐसा कोई उपाय बताएं जिससे हमें शांति प्राप्त होगी?

तब गुरु अर्जुन देव ने कहा- अगर आप मन की शांति चाहते हो तो जैसे आप लोगों को कहते हो।

उसी प्रकार आप भी करो, अपनी कथनी पर अमल किया करो परमात्मा को संग जानकर उसे याद रखा करो। अगर आप सिर्फ धन इकट्ठा करने के लालच से कथा करोगे तो आपके मन को शांति कदापि प्राप्त नहीं होगी बल्कि उलटा आपके मन का लालच बढ़ता जाएगा और पहले से भी ज्यादा दुखी हो जाओगे। अपने कथा करने के तरीके में बदलाव कर निष्काम भाव से कथा करो, तभी तुम्हारे मन में सच्ची शांति अनुभूत होगी।

एक अन्य प्रसंग के अनुसार एक दिन गद्दी पर बैठने के बाद गुरु अर्जुन देव के मन में विचार आया कि सभी गुरुओं की बानी का संकलन कर एक ग्रंथ बनाना चाहिए। जल्द ही उन्होंने इस पर अमल शुरू कर दिया। उस समय नानकबानी की मूल प्रति गुरु अर्जन देव के मामा मोहनजी के पास थी।

उन्होंने वह प्रति लाने भाई गुरदास को मोहनजी के पास भेजा। मोहनजी ने प्रति देने से इंकार कर दिया। इसके बाद भाई बुड्ढा गए, वे भी खाली हाथ लौट आए। तब गुरु अर्जन स्वयं उनके घर पहुंच गए। सेवक ने उन्हें घर में प्रवेश से रोक दिया। गुरुजी भी धुन के पक्के थे। वे द्वार पर ही बैठकर अपने मामा से गा-गाकर विनती करने लगे।

इस पर मोहनजी ने उन्हें बहुत डांटा-फटकारा और ध्यान करने चले गए। लेकिन गुरु पहले की तरह गाते रहे। अंततः उनके धैर्य, विनम्रता और जिद को देखकर मोहनजी का दिल पसीजा और वे बाहर आकर बोले- बेटा, नानकबानी की मूलप्रति मैं तुम्हें दूंगा, क्योंकि तुम्हीं उसे लेने के सही पात्र हो। इसके बाद गुरु अर्जुन ने सभी गुरुओं की बानी और अन्य धर्मों के संतों के भजनों को संकलित कर एक ग्रंथ बनाया, जिसका नाम रखा 'ग्रंथसाहिब' और उसे हरमंदिर में स्थापित करवाया।

अपने ऐसे पवित्र वचनों से दुनिया को उपदेश देने वाले गुरुजी का मात्र 43 वर्ष का जीवनकाल अत्यंत प्रेरणादायी रहा। वे आध्यात्मिक चिंतक एवं उपदेशक के साथ ही समाज सुधारक भी थे।

गुरु अर्जुन देव जी ने 'तेरा कीआ मीठा लागे। हरि नाम पदारथ नानक मागे' शब्द का उच्चारण करते हुए सन् 1606 में वें अमर बलिदानी बन गए। अपने जीवन काल में गुरुजी ने धर्म के नाम पर आडंबरों और अंधविश्वास पर कड़ा प्रहार किया। आध्यात्मिक जगत में गुरु जी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

❑❑❑

वक्तव्य

आप इधर-उधर की सुनकर संघ के बारे में क्यों आलोचना करते हैं, संघ को नजदीक आकर देखिए।

-दत्तात्रेय होसबाले, सरकार्यवाह (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

हर मुस्लमान को सीएए का स्वागत करना चाहिए, मुसलमानों को इससे कोई नुकसान नहीं।

-मौलाना शहाबुद्दीन रज़वी, बरेलवी

किसान न जलाएं नरवाई

जबलपुर । किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग ने जिले के किसानों से गेहूं फसल की कटाई के बाद नरवाई (भूसे) को आग लगाकर नष्ट नहीं करने की अपील की है। साथ ही किसानों को रोटावेटर चलाकर बारीक हुई नरवाई को मिट्टी में मिलाकर जैविक खाद तैयार करने की सलाह दी गई है। किसानों से कहा गया है कि वे नरवाई को बिना हटाये जीरो टिल सीड ड्रिल से जायद फसल मूंग, उड़द, तिल आदि की बोनी भी कर सकते हैं।

उपसंचालक किसान कल्याण एवं कृषि विकास रवि आम्रवंशी के अनुसार जिले में लगभग 1 लाख 90 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में आच्छादित गेहूं रबी की प्रमुख फसल है। किसानों द्वारा मार्च के चौथे सप्ताह से इसकी कटाई कर शेष बची नरवाई को आग लगाकर नष्ट कर दिया जाता है, जिससे कृषि को नुकसान होता है।

नरवाई में लगभग 0.5 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.6 प्रतिशत सल्फर एवं 0.8 प्रतिशत पोटाश उपस्थित होता है। एक हेक्टेयर भूमि में 40 क्विंटल गेहूं के उत्पादन पर नरवाई की 60 क्विंटल मात्रा प्राप्त होती है। इस नरवाई में नाइट्रोजन की 30 किलो, सल्फर की 36 किलो, पोटाश की 90 किलो मात्रा प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है। वर्तमान में जिसका मूल्य लगभग 300 रूपये प्रति किलो होता है। जो जलकर नष्ट हो जाता है। गेहूं फसल की कटाई के बाद नरवाई को जलाने से भूमि में उपलब्ध जैव विविधता समाप्त हो जाती है। मिट्टी में उपस्थित सूक्ष्म जीव जलकर नष्ट हो जाते है। सूक्ष्म जीवों के नष्ट होने से जैविक खाद का निर्माण बंद हो जाता है। क्षेत्र में आग के प्रभाव से भूमि कठोर हो जाती है एवं उसकी जल धारण क्षमता कम हो जाती है। फसलें भी जल्द ही सूखने लगती हैं एवं पर्यावरण प्रदूषित होता है। इसके साथ ही तापमान में वृद्धि होती है एवं कार्बन, नाइट्रोजन तथा फास्फोरस के अनुपात में कमी होने के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है।

❑❑❑

उज्जैन में वैदिक घड़ी का लोकार्पण

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 29 फरवरी को उज्जैन की धरा पर जीवाजी वेधशाला के पास विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का बटन दबाकर वर्चुअल लोकार्पण किया।

बाबा महाकाल की नगरी प्राचीनकाल से कालगणना का केन्द्र रही और अब विक्रमादित्य वैदिक घड़ी स्थापित होने से पुनःकालगणना होगी। उल्लेखनीय है कि विक्रमादित्य वैदिक घड़ी का निर्माण लखनऊ की संस्था आरोहण के आरोह श्रीवास्तव ने किया है। इसमें के 24 घन्टों को 30 मुहूर्त (घटी) में बाँटा गया है, हर घन्टी का धार्मिक नाम और विशेष अर्थ होगा। घड़ी में घन्टे, मिनट और सेकण्ड वाली सुई भी रहेगी। सूर्योदय और सूर्यास्त के आधार पर यह समय की गणना करेगी। मुहूर्त गणना, पंचांग, मौसम से जुड़ी जानकारी भी हमें इस घड़ी के माध्यम से मिलेगी।

EKLAVYA UNIVERSIT
ज्ञानप्राप्तये लक्ष्यसन्धानम्
Sagar Road, Damoh (MP) India
Estd. by Madhya Pradesh Niji Vishwavidyalaya (Sthapana Avam Sanchalan) Adhiniyam 2021, estd. Sept. 2020 and Reinstated, 30th March 2021, No. 184
•Registered under UGC 2(f)/12(b) Act 1956
COURSES APPROVED

Admission Open for 2023-24

Ph.D. Masters, Bachelor, Diploma & Certificates in

Engineering, Computer Science, Basic and Applied Sciences, Forensic Science, Agriculture, Library Science, Management, Education, Physical Education, Commerce, Nursing, Paramedical Sciences, Fashion Design, Social Work, Performing Arts, Fine Arts, Arts & Humanities, Yoga/Naturopathy

Notifications will soon be issued for Full Time/ Part Time Ph.D. Entrance Examination in all the subjects.

Applications are invited for the following posts

- Deputy & Asst. Registrars
- Dean Academics
- Dean Student Welfares
- Dean Research
- Director Admissions
- Proctor
- Administrator
- Training & Placement Officer
- Computer Operators
- Office Executives
- Counsellors
- Admission Officers
- Private Assistance
- Purchase Executives
- HR Managers
- Accounts & Finance Executives

Professor, Associate Professor, Assistant Professor in
- Management
- Commerce
- Education
- Physical Education
- Library Science
- Journalism
- Agriculture
Agronomy, Horticulture, Soil Science, Genetics & Plant Breeding (GPB), Plant Pathology, Seed Technology, Agricultural Extension & Communication
- Naturopathy & Yogic Sc.
- Nursing
Child Health, Mental Health, Obstetrics & Gyanecology, Community Health, Medical, Surgical
- Paramedical Sciences
- History
- Geography
- Sociology
- Economics
- Political Science
- Psychology
- Hindi Lit.
- English Lit.
- Sanskrit Lit.
- Jain & Prakrit
- Philosophy
- Zoology
- Botany
- Chemistry
- Physics
- Mathematics
- Microbiology
- Biochemistry| Biotechnology
- Forensic Science
- Computer Application
- Design
Fashion Design
- Fine Arts
Drawing & Painting, Sculpture, Applied Arts
- Performing Arts
Vocal Music, Swar Vadya, Sugam Sangeet, Kathak, Bharatnatyam, Oddisi
- Engineering
Civil, Mechanical, Electrical & Electronics, Computer Science, Electronics & Comm.

Walk-in interview on Sunday, 4 June 2023, at university campus

- Qualifications and experience as per UGC norms. Salary as negotiated.
- University reserves the right, not to fill any of the above positions.
- Aplication on plain paper containing details of High School, Intermediate, Graduation, Post Graduation, Ph.D. along with attested photocopies of testimonials/ Certificates with complete Resume and two passport size photographs should reach the Registrar or e-mail (hr@eklavyauniversity.ac.in) within 7 days of the publication of this advertisementt. or Contact : 7987358612 (HR)

YOUR Future Choice
विषय का चयन भविष्य की दिशा तय करता है....
अपने भविष्य को सही दिशा दें...

www.eklavyauniversity.ac.in | email: info@eklavyauniversity.ac.in
7999589970 | 9753040755 | 7987358612
Stay Connected
हमसे जुड़े रहें

सृष्टि चक्र का शाश्वत सनातन संवाहक भारतीय हिन्दू नवसम्वत्सर

-कृष्णमुरारी त्रिपाठी अटल

चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि भारतीय संस्कृत में अपना विशिष्ट महत्व रखती है। यह तिथि नवसम्वत्सर-हिन्दू नववर्ष के उत्साह पर्व की तिथि है। यह तिथि भारतीय मेधा के शाश्वत वैज्ञानिकीय चिंतन-मंथन के साथ-साथ लोकपर्व के रङ्ग में जीवन के सर्वोच्च आदर्शों से एकात्मकता स्थापित करती है। वैज्ञानिकता पर आधारित प्राचीन श्रेष्ठ कालगणना पध्दति के अनुरूप ऋतु चक्र परिवर्तन एवं सूर्य-चन्द्र की गति के अनुरूप नव सम्वत्सर का प्रारम्भ होता है। भारतीय संस्कृति यानि हिन्दू संस्कृति के माहों (मासों) का नामकरण नक्षत्रों के नाम पर हुआ। इसके लिए हमारे पूर्वजों ने व्यवस्था दी कि- जिस मास में जिस नक्षत्र में चन्द्रमा पूर्ण होगा, वह मास उसी नक्षत्र के नाम से जाना जाएगा। इसी पध्दति के अनुसार चैत्र-चित्रा, वैशाख-विशाखा, ज्येष्ठ-ज्येष्ठ, अषाढ़ - अषाढ़ा, श्रावण - श्रवण, भाद्रपद - भाद्रपद, अश्विन-आश्विनी, कार्तिक-कृतिका, मार्गशीर्ष-मृगशिरा, पौष-पुष्य, माघ-मघा, फाल्गुन-फाल्गुनी य आदि के आधार पर नामकरण किया है।

सृष्टि रचयिता भगवान ब्रह्मा जी ने चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को सूर्योदय के साथ ही सृष्टि निर्माण कार्य प्रारम्भ किया था। जो कि सात दिनों तक चला। भारतीय संस्कृति एवं प्रकृति का पारस्परिक तादात्म्य भी अपने आप में अनूठा है। बसंतोत्सव में माँ वीणापाणि के पूजन के सङ्ग ऋतुराज वसंत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से अपनी पूर्णता को प्राप्त करता हुआ दिखता है। महान गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री भास्कराचार्य ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही कालखण्ड की वैज्ञानिक विवेचना दिन, महीने और वर्ष की गणना के साथ 'पंचाग' की रचना की थी। वर्तमान में गेग्रोरियन कैलेण्डर के प्रचलन के बाद भी भारतीय जीवन पद्धति में भारतीय पंचाग प्रणाली के अनुसार ही शुभ मुहूर्त देखकर समस्त शुभकार्य एवं प्रयोजन सम्पन्न कराए जाते हैं।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि में सांस्कृतिक यात्रा : चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से ही माँ आदिशक्ति दुर्गा भवानी की उपासना का पावन पर्व चैत्र नवरात्रि भी प्रारम्भ होता है। नवसम्वत्सर की चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि ब्रम्हा जी की सृष्टि रचना के साथ-साथ चतुर्युगों सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग की वैशिष्ट्य से भी जोड़ती है। त्रेता में यह तिथि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम से जुड़ती है। चौदह वर्ष के वनवास काटने एवं अधर्म रुपी रावण का समूल संहार करने के पश्चात भगवान अयोध्या लौटे। तदुपरान्त चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा तिथि को उनका वैदिक विधि विधान के साथ राज्याभिषेक हुआ। चौत की नवमी तिथि को ही भगवान श्रीराम का प्राकट्योत्सव भी आता है। द्वापर में महाभारत युद्ध पूर्ण होने पर युधिष्ठिर का राजतिलक हुआ। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि से ही उन्होंने युधिष्ठिर सम्वत का भी शुभारम्भ किया था। वरुणदेव के अवतार माने जाने वाले भगवान झूलेलाल का प्राकट्य पर्व 'चेटी चंड' को सिंधी समाज के साथ साथ समूचा भारत मनाता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि को ही महाकाल की नगरी अवंति (उज्जयिनी) में महान सम्राट राजा विक्रमादित्य ने विक्रम सम्वत का शुभारम्भ किया था। वर्तमान में यही विक्रम सम्वत भारतीय जीवन पद्धति में सर्वाधिक प्रचलन में है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा की तिथि अपने आप में संस्कृति एवं विचारों के वैशिष्ट्य को समेटे हुए है। इसी तिथि को महर्षि दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना की थी। सिख पंथ की दशम गुरु परम्परा के दूसरे गुरू-गुरु अंगदेव का जन्मपर्व भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही हुआ था। वहीं विश्व के अपने आप में अनूठे-स्वयंसेवी सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रथम सरसंघचालक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म भी इसी तिथि को हुआ था। उन्होंने 27 सितम्बर 1925 को विजयादशमी की तिथि को हिन्दू समाज को संगठित कर राष्ट्र को सर्वशक्तिमान बनाने के उद्देश्य से संघ की स्थापना की थी।

राष्ट्र को एकसूत्रता में पिरोता है नवसम्वत्सर : नवसम्वत्सर-हिन्दू नववर्ष समूचे भारत को एकसूत्र में पिरोता है। यह पर्व देश के विभिन्न हिस्सों में यथा-दक्षिण भारत क्षेत्र के- आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, केरल व कर्नाटक इसे 'उगादि पर्व' व कश्मीर में 'नवरेह' तो वहीं पूर्वोत्तर क्षेत्र के असम में 'बिहू' और मणिपुर में माह के पहले दिन के रूप में- सजीबू नोंग्मा, पनबा या मीती चेरोबा सा सजीबू चेरोबा आदि के रूप में मनाया जाता है। साथ ही तमिलनाडु में 'पुतुहांडु' और केरल में 'विशु' के रूप में भी नवसम्वत्सर मनाने की परम्परा देखने को मिलती है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही महाराष्ट्र में 'गुड़ी पड़वा' हर्षोल्लास के रंग में डूबकर मनाया जाता है। इस उल्लास पर्व का क्षेत्र भगवान परशुराम की भूमि गोवा , कोंकण क्षेत्र तक विस्तृत है। वहीं पंजाब में 'बैसाखी' के रूप में और बंगाल प्रांत में 'पोहेला बैसाखी' या 'नबा बरसा' के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। यह नवसम्वत्सर महान ऋषि परम्परा द्वारा प्रणीत - सृष्टि चक्र के शाश्वत सनातन प्रवाह का संवाहक है। ज्ञान-विज्ञान एवं उत्सव के विविध रङ्गों से सुसज्जित हिन्दू नववर्ष मनुष्य व प्रकृति के साथ एकात्म स्थापित करने वाला है। आइए 'स्व' के उद्घोषक इस पर्व में 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के चिर सनातन संदेश को आत्मसात करें और कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर रहें।

❑❑❑

राष्ट्रोत्थान का अभूतपूर्व अवसर : ये मतदान का महापर्व

-प्रशांत बाजपेई

ये लोकसभा चुनाव उस समय संपन्न होने जा रहे हैं, जब हमारा देश एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है। ये वो समय है, जब सदियों की पीड़ाओं और संघर्षों में से निकलकर भारत एक बार फिर दुनिया में सर उठाकर खड़ा हो गया हैं। करोड़ों भारतवासी एक बार फिर अपने देश के विश्वगुरु बनने का स्वप्न देख रहे हैं। इस स्वप्न को हमें साकार करना है। कई जिम्मेदारियाँ उठानी है। उन जिम्मेदारियों में से एक है शत-प्रतिशत मतदान, और राष्ट्रीय मुद्दों पर मतदान। भारत के सुनहरे भविष्य और हमारी खुशहाली के लिए मतदान। 19 अप्रैल से 1 जून तक 7 चरणों में मतदान होगा। चुनाव परिणाम 4 जून को आएगा। मध्यप्रदेश में 13 मई तक मतदान हो जाएगा। महाकौशल, बुंदेलखंड और बघेलखंड में 19 व 26 अप्रैल तक मतदान पूर्ण हो जाएगा।

सम्मान, गौरव और आत्मविश्वास - आगे बढ़ने के पहले ये देखना होता है कि हम कहाँ से चले थे और कहाँ आ गए हैं। बात की शुरुआत भारत के गौरव से। 500 वर्षों के संघर्ष और स्वाधीनता उपरांत 77 वर्षो कि दिर्घ प्रतिक्षा के बाद अयोध्या में भगवान श्री राम के जन्म स्थान पर भव्य मंदिर का निर्माण हो चुका है। यह मंदिर दुनिया के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। 22 जनवरी 2024 को प्राण प्रतिष्ठा का सारे देश में जो उत्सव मनाया गया वह अभूतपूर्व है। काशी विश्वनाथ कॉरीडोर और उज्जैन का महाकाल लोक हमारे गौरव की गाथा कह रहे हैं। इतना ही नहीं, संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश में भी भव्य मंदिर खड़े हो रहे हैं। सारी दुनिया में विश्व योग दिवस मनाया जा रहा है। पिछले साल सारी दुनिया के 25 करोड़ लोगों ने विश्व योग दिवस में भाग लिया। कह सकते हैं कि आज सारी दुनिया में सनातन संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है।

पहली बार भारतीयों के बने हुए संसद भवन से देश चल रहा है। पूर्व का संसद भवन अंग्रेजों के द्वारा बनाया हुआ था। नया संसद भवन भारत की संस्कृति दर्शन इतिहास और महापुरुषों की प्रेरणा से ओतप्रोत है। खेल हो अंतरिक्ष, सब जगह भारत अपनी सफलता के झंडे गाड़ रहा है। साल 2023 के एशियाई खेलों में पदकों की झड़ी लग गई। भारत के खिलाड़ियों ने 20 स्वर्ण, 38 रजत और 41 कांस्य पदक जीते। मंगलयान, चंद्रयान और गगनयान पर दुनिया हमारी प्रशंसा कर रही है, और जल्दी ही भारतीय अंतरिक्ष यात्री भारतीय यान में बैठकर अंतरिक्ष में जाने वाले हैं। स्वदेशी अंतरिक्षयान पुष्पक विमान का दूसरा सफल परीक्षण हो चुका है। जब दुनिया को कोरोना जैसी भीषण महामारी ने घेर लिया तब भारत में हर भारतवासी का निःशुल्क कोरोना टेस्ट हुआ और निःशुल्क वैक्सीन लगी। यह देखकर अमेरिका और यूरोप के विकसित राष्ट्र भी अचम्भे में आ गए। इतना ही नहीं, भारत ने दुनिया के ज़रूरतमंद देशों को भी वैक्सीन बाँटी। इसीलिए अफ्रीकी देश पापुआ न्यू गिनी के राष्ट्रपति ने आभार जताते हुए भारत के प्रधानमंत्री के पैर छुए। दक्षिण अमरीकी देश ब्राजील के राष्ट्रपति ने संजीवनी बूटी ले जाते हुए हनुमान जी का चित्र ट्वीट किया। भारत की स्वतंत्र और ताकतवर विदेशनीति की सब ओर धाक है। आज का भारत किसी के दबाव में नहीं आता, और अपने फैसले लेता है। रूस-यूक्रेन युद्ध छिड़ा तो अमरीका और यूरोप के देशों ने भारत पर बहुत दबाव बनाया कि हम रूस से तेल न खरीदें, लेकिन भारत ने अपनी जनता के हित को देखते हुए किसी की परवाह नहीं की, रूस से तेल आयात करना जारी रखा। इस सबके बाद, सितंबर 2023 में भारत के नेतृत्व में दिल्ली में, इतिहास का सफलतम जी -20 सम्मेलन हुआ। सब देश आए, और भारत ने जो प्रस्ताव रखे, सब ने माने। इन सब बातों से देश-विदेश में रहने वाले भारतवासियों का सम्मान बढ़ गया है।

सुरक्षित हुआ भारत - आज़ादी के बाद से पाकिस्तान भारत के लिए सिरदर्द बना हुआ था, और चीन संकट। पाकिस्तान भारत के अंदर आतंकी हरकतें करवाता था, और हम दुनिया में पाकिस्तान की शिकायत करते थे। आज भारत पाकिस्तान के अंदर घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक करता है, और पाकिस्तान दुनिया में भारत की शिकायत करता है, जिसे कोई नहीं सुनता। आज भारत ने पाकिस्तान को दुनिया में अलग-थलग कर दिया है। उसकी अर्थव्यवस्था चरमरा रही है। चीन जो जब चाहे तब, हमारी सीमा में घुस आता था, अब हद में रहना सीख रहा है। गलवान और डोकलाम में उसे भारत की सेना ने मुंहतोड़ जवाब

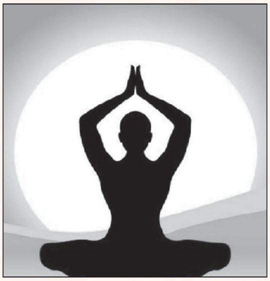

दिया है। चीनी माल और चीनी एप दोनों को भारत से बाहर का रास्ता दिखाया जा रहा है। अत्याधुनिक लड़ाकू विमान राफेल, एस 400 चीन के आखिरी छोर और यूरोप तक तक मार करने वाली अग्नि मिसाइल, ब्रह्मोस मिसाइल, स्वदेशी युद्धपोत और भारत में बढ़ता सुरक्षा उत्पादन भारत की सुरक्षा की गारंटी बन गए हैं।

आज वो दौर नहीं है जब सारे देश में बम धमाके और आतंकी हमले होते थे। उलटा, पाकिस्तान और कनाडा में छिपे आतंकी वहीं मारे जा रहे हैं। भारत को छेड़कर अब कोई नहीं बच सकता। जम्मू कश्मीर से धारा 370 समाप्त हो गई। पत्थरबाजी और हुर्रियत कांफ्रेंस जैसे अलगाववादियों की हुल्लड़बाजी बंद हो गई। श्रीनगर में शान से तिरंगा लहरा रहा है। देश में शांति स्थापित हो रही है। बलवा और उत्पात करने वालों में बुलडोज़र का डर है। एटीएस और एनआईए धडाधड कार्रवाई कर रही हैं।

विकास, जन सुविधा और जन कल्याण - पिछले कुछ सालों में 1-6 लाख स्टार्टअप शुरू हुए भारतीयों के डिजिटल लेनदेन में 90 गुना की वृद्धि हुई। आज दुनिया के कुल डिजिटल लेनदेन में से 46 प्रतिशत अकेले भारत का हिस्सा है। अमरीका और यूरोप भारत से पीछे हैं। आज भारत में प्रति घंटे 1 करोड़ से अधिक डिजिटल लेनदेन हो रहे हैं। सड़क, हवाई अड्डा, सार्वजनिक परिवहन, लॉजिस्टिक इंफ्रास्ट्रक्चर, रेलवे, बंदरगाह और जल मार्ग के विकास के लिए 100 लाख करोड़ रुपए की प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना चल रही है। आज भारत में सड़कों और हाईवे का कार्य अन्तर्रष्ट्रीय स्तर पर पहुँच रहा है। सब ओर विकसित बायपास, फ्लाईओवर और रिंगरोड दिख रहे हैं।

2014 और 2024 के बीच के अंतर को देखें तो, तब 5 शहरों में मेट्रो रेल की तुलना में अब 22 शहरों में मेट्रो रेल सुविधा, तब हवाई अड्डों से अब 150 हवाई अड्डे तक का सफ़र, मेडिकल कॉलेज 380 से बढकर 700 प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से जुड़े ग्राम55 प्रतिशत से बढ़कर 99 प्रतिशत हो गए हैं। पहले के हर दिन 12 किलोमीटर के मुकाबले आज प्रतिदिन 28 किलोमीटर सड़क निर्माण हो रहा है। सुंदर चौड़ी सड़कें हिमालय के दुर्गम क्षेत्रों तक जा पहुँची हैं।

2014 में ग्राम पंचायतों तक पहुँचने वाले ऑप्टिकल फाइबर की लम्बाई 380 किलोमीटर थी, आज 6 लाख किलोमीटर है, यही कारण है मोबाइल डेटा 2014 के मुकाबले 30 गुना सस्ता हो गया है। 2014 में 1 जीबी डेटा की कीमत सवा दो सौ से ढाई सौ रूपए थी। आज इतने में महीना भर मजे से नेट चलता है। इंटरनेट की स्पीड कई गुना बढ़ गई है। गाँव-गाँव में यूट्यूब देखा जा रहा है। तहसील-पंचायतें और स्कूल इंटरनेट से जुड़ गए हैं। इससे सुविधाएँ बढ़ी हैं।

रेल व्यवस्थाएँ उन्नत हुई है वंदे भारत ट्रेन,आधुनिक कोच, स्वच्छता और आधुनिक रेलवे स्टेशन इसका प्रमाण हैं। 2014 तक 20 हजार किलोमीटर रेल लाइन का विद्युतीकरण हुआ था, पिछले दस सालों में 40 हजार किलोमीटर नया विद्युतीकरण हुआ है। इसके अलावा 13.76 करोड़ घरों में नल जल कनेक्शन, 12 करोड़ शौचालय बनाकर खुले में शौच से शत प्रतिशत मुक्ति, 100 प्रतिशत गाँवों में एलपीजी कनेक्शन, हर साल करोड़ से अधिक नागरिकों को 5 लाख रुपए तक मुफ्त इलाज की गारंटी और इसके अंतर्गत 28-30 करोड़ आयुष्मान कार्ड और प्रधानमंत्री जन औषधि केंद्र बने हैं। प्रधानमंत्री जनधन योजना में 51 करोड़ खाते खोले गए जिसमें 28.29 करोड़ महिलाओं के और 34 करोड़ ग्रामीण और अर्ध शहरी क्षेत्रों से हैं। इन खातों ने भ्रष्टाचार रोकने में बड़ी भूमिका निभाई। किसान-मजदूर- विधवा पेंशन- छात्रवृत्ति आदि का पैसा सीधे खाते में आता है।

हर देशवासी के सर पर छत देने वाली पीएम आवास

योजना दुनिया में अनोखी योजना है। भारत आज विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश है। ऐसे में हर देशवासी के सर पर छत देने का संकल्प अभूतपूर्व बात है। 2023 तक शहरी क्षेत्रों में 77.27 लाख और ग्रामीण क्षेत्रों में 2.41 करोड़ आवास हितग्राहियों को सौंपे जा चुके थे। ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि सीमांकन बहुत बड़ी समस्या रहा है, इसके लिए स्वामित्व योजना के अंतर्गत गाँवों के आवासों की ड्रोन से मैपिंग की जाती है। अब तक 2/35/569 गाँवों को नक्शे सौंपे जा चुके हैं। संतोष की बात है कि आज देशवासियों के जीवन स्तर में बहुत सुधार आया है। कोरोना काल में निःशुल्क अनाज वितरण और बैंक खातों में 500/- रूपए राशि डालने से लाखों की सहायता हो सकी। शासकीय विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन योजना, अनेक स्वास्थ्य योजनाएँ, 1/- रूपए महीने में जीवन बीमा, श्रमिक पेंशन योजना से देश का बहुत बड़ा वर्ग लाभान्वित हुआ है।

युवा और महिला – बीते सालों में 4 करोड़ से अधिक सुकन्या खाते खुले जिनमे 1-5 लाख करोड़ रुपये जमा हुए। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना में 10 करोड़ परिवारों को रसोई गैस मिली। पीएम मुद्रा योजना में 44-46 करोड़ लोन दिए गए इसमें से 69: महिला उद्यमियों को मिले। कन्या विवाह योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, बालिका समृद्धि योजना ने, स्त्रियों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को बड़े सकारात्मक ढंग से बदला है। स्थानीय निकाय चुनाव और शिक्षक भतऍ में 50 प्रतिशत , पुलिस की नौकरियों में 30 प्रतिशत और संसद में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण इस बात का प्रमाण है कि हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित हो गई है। हर घर शौचालय योजना ने नारी की मर्यादा की रक्षा की है। देश में आज प्रसूताओं के लिए विशेष

अस्पताल, स्वास्थ्य केंद्र व एम्बुलेंस उपलब्ध हैं।

नई शिक्षा नीति में वास्तविक ज्ञान, रोजगार, स्किल डेवलपमेंट और व्यावहारिकता पर जोर दिया गया है। भविष्य में छात्र-छात्राओं को अपनी इच्छा से विषयों के चयन की सुविधा मिलेगी। आज देश युवा रोजगार देने वाला बन रहा है। स्टार्टअप बनाकर नाम कमा रहा है और अग्निवीर बनकर देश की रक्षा भी कर रहा है। अग्निवीर योजना की विशेषता है कि युवा महज 4 साल में प्रशिक्षण और अनुभव भी ले लेता है, और 25 लाख रुपए भी कमा लेता है। इस अनुभव और धन के आधार पर वह अपना काम भी शुरू कर सकता है, या अर्धसैनिक बलों अथवा अन्य सेवाओं में जा सकता है। शासकीय रिक्त पद तेजी से भरे जा रहे हैं, परन्तु दुनिया के किसी भी देश में, अकेले सरकारी नौकरी से रोजगार पैदा नहीं होता। रोजगार तो लघु उद्योगों, नए-नए काम, नवाचार से पैदा होता है। इस दिशा में अनेक योजनाएँ संचालित हैं।

अवसर, न्याय और गौरव -अनुसूचित जाति – पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविद जी के राष्ट्रपति चुने जाने से साहस और उत्साह का संचार हुआ था। अजा बाहुल्य 600 से अधिक ग्राम आदर्श ग्राम बने हैं। मप्र का अनुसूचित जाति बजट 286 करोड़ (2003) से बढाकर 26 हजार करोड़ हो गया है। समाज के लिए स्वरोजगार योजना, संत शिरोमणि रविदास ग्लोबल स्किल पार्क, सावित्रीबाई फुले स्व सहायता योजना, मुख्यमंत्री अनुसूचित जाति वित्त पोषण योजना से समाज का चित्र बदल रहा है। अनुसूचित जाति के प्रति होने वाले अपराधों में भारी कमी आई है। ऐसे किसी भी अपराध पर त्वरित कार्रवाई हो रही है। समाज में छुआछूत की सोच भी पहले से काफी कम हुई है। मध्यप्रदेश के 45हजार गाँवों में अनुसूचित जाति के विरुद्ध अपराध का एक भी मामला नहीं है।

अवसर, न्याय और गौरव - अनुसूचित जनजाति – देश के अनुसूचितजाति समुदाय का बड़ा हिस्सा मध्यप्रदेश में रहता है। हमारी राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू भारत की नारी और जनजातीय समाज दोनों की शक्ति का प्रतीक हैं। समाज 15 नवंबर 2022 से मध्यप्रदेश में पेसा क़ानून लागू हो गया है। शहडोल में हुए इस कार्यक्रम में स्वयं राष्ट्रपति जी उपस्थित थीं। पेसा भारत के अनुसूचित (जनजातीय) क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को, पारंपरिक ग्राम सभाओं के माध्यम से स्वशासन की शक्ति देने वाला कानून है। इसके अंतर्गत जनजातीय समुदायों की

पारंपरिक मान्यताओं का संरक्षण, छोटे पैमाने के वन उत्पादों पर ग्राम सभा का स्वामित्व, जनजातीय व्यक्ति की भूमि के हस्तांतरण को रोकना, ग्रामीण बाजारों का जनहित में संचालन, पंचायत की विकास योजनाओं में जनजातीय भागीदारी आदि का लक्ष्य रखा गया है।

जमीनों के हेरफेर को रोकने के लिए, पटवारी या बीट गार्ड को, हर साल गांव की जमीन, उसका नक्शा, वनक्षेत्र का नक्शा, खसरे की नकल आदि, गांव में लाकर ग्रामसभा को दिखानी होगी। नामों में गलती है तो ग्रामसभा को उसे ठीक कराने का अधिकार होगा।

जनजातीय क्षेत्रों में मानव तस्करी और बंधुआ मजदूरी की गंभीर समस्या चली आई है। पेसा में इसका ध्यान रखा गया है। गांव से अगर काम के लिए युवक-युवती या किसी अन्य को ले जाया जाता है तो उसे पहले ग्रामसभा को बताना पड़ेगा कि ले जाने वाला कौन है, कहां ले जा रहा है ताकि जरूरत के वक्त उनकी मदद हो सके। बिना बताए ले जाने पर कानूनी कार्रवाई की जाती है। सूदखोरी को भी रोका गया है।

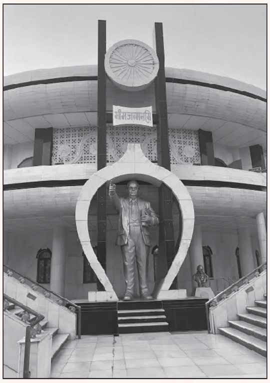

वनाधिकार नियम में प्रदेश के 827 वन ग्रामों को राजस्व ग्राम में परिवर्तित करने का निर्णय लिया गया है। तेंदुपत्ता संग्रहण दर साल 2007 में 450 रुपए प्रति बोरा थी, अब 3000/- रूपए है। 'आहार अनुदान योजना' के तहत बैगा, भारिया और सहरिया समाज की 2/24/000 से अधिक महिलाओं के खाते में हर साल 224 करोड़ रुपये का भुगतान किया जा रहा है। मध्यप्रदेश की जनजातीय लोककलाओं और उत्पादों को वैश्विक स्तर पर स्थान प्रदान करने के उद्देश्य से उनकी 'जिओ टैगिंग' का कार्य प्रारम्भ हुआ है। विगत 17 वर्षों में प्रदेश में जनजातीय क्षेत्रों में प्राथमिक शालाओं की संख्या में 81 प्रतिशत, माध्यमिक शालाओं में 55 प्रतिशत, हाईस्कूल की संख्या में 112 प्रतिशत और कन्या शिक्षा परिसरों की संख्या में 2/633 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। आकांक्षा योजना के अंतर्गत मेधावी जनजातीय छात्र-छात्राओं को (प्रतिवर्ष 800) विदेश जाकर पढ़ने की भी सुविधा दी जा रही है। लाड़ली लक्ष्मी, लाड़ली बहना और आयुष्मान भारत स्वास्थ्य योजना का बड़ा लाभ जनजातीय समाज को मिल रहा है। सारे देश में जनजातीय समाज आगे आता दिख रहा है।

कृषक और मजदूर – प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना में 16-2 करोड़ नामांकन हुए। पीएम विश्वकर्मा योजना में 22.08 लाख कारीगरों और शिल्पियों का नामांकन हुआ।

23.38 लाख किसान पीएम मानधन योजना का हिस्सा बने और 24 करोड़ सॉइल हेल्थ कार्ड बने। फसलों का समर्थन मूल्य लगातार बढ़ा है, जो आज लागत से डेढ़ गुना है। बड़ी मात्रा में फसलें खरीदी जा रही हैं। नीम कोटेड यूरिया से, यूरिया की कालाबाजारी रुकी है। एक जिला- एक उत्पाद योजना, फसलों के हिसाब से मौसम जोन, हर जिले में कृषि विज्ञान केंद्र, नए-नए में कृषि महाविद्यालय, केंद्र व राज्य सरकार द्वारा 6.6 हजार किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना आदि मील के पत्थर बन गए हैं।

महान पूर्वजों की प्रेरणा – संतोष की बात है कि महान पूर्वजों की विरासत के साथ न्याय की शुरुवात हो गई है। गुजरात में नर्मदा तट पर खड़ी विश्व में सबसे ऊँची सरदार पटेल की प्रतिमा, नए संसद भवन में प्रेरणा देती डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमा, इंडियागेट पर स्थापित नेताजी सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा, खण्डवा के ओंकारेश्वर में भगवान आदि शंकराचार्य का दिव्य विग्रह एकात्मधाम, जबलपुर में स्थापित होने जा रही रानी दुर्गावती की अष्टधातु की 52 फुट ऊँची प्रतिमा बदलते समय की गवाही दे रहे हैं। मध्यप्रदेश में बाबा साहब अम्बेडकर से जुड़े 5 तीर्थ स्थलों का पंचतीर्थ के रूप में पुनर्विकास हो रहा है। सागर में संत शिरोमणि श्री रविदास जी का स्मारक बन रहा है।

पहले मतदान, फिर जलपान – स्वामी विवेकानंद ने कहा था, कि भारत का अतीत महान था, पर भारत का भविष्य और भी गौरवशाली होगा। उन्होंने कहा था कि मैं स्पष्ट भविष्य देख रहा हूँ, कि भारत माँ पहले से भी अधिक महिमामयी और गौरवशाली होकर विश्वगुरु के सिंहासन पर बैठी है। आओ उसकी जय-जयकार से इस विश्व को गुंजा दें। इन प्रेरणादायी शब्दों को मन में धारण कर हमें राष्ट्रहित में मतदान करने करवाने का संकल्प लेना अहै। सारे समाज को इस आभियान में जोड़ना है। अभूतपूर्व अवसर है ये मतदान महापर्व। इसे सार्थक बनाना है।

❑❑❑

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नाम पर दुष्प्रचार रोकने पुलिस और चुनाव आयोग में की गई शिकायत

नागपुर। संघ के प्रचार विभाग के अनुसार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना वर्ष 1925 में हुई थी। यह सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में सक्रिय विश्व प्रसिद्ध संगठन है। कुछ साल पहले जनार्दन मून ने 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' नाम से एक संगठन बनाने की घोषणा की थी और दावा किया था कि संघ पंजीकृत नहीं है। मून ने सहायक रजिस्ट्रार कार्यालय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नाम से एक संगठन बनाने की अनुमति भी मांगी, लेकिन सहायक रजिस्ट्रार कार्यालय ने उन्हें अनुमति देने से इनकार किया था। इसके बाद जनार्दन मून ने हाई कोर्ट और बाद में सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की, लेकिन 2019 में ही दोनों अदालतों ने उनकी याचिका खारिज कर दी। फिलहाल जनार्दन मून के नाम पर 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' नाम की कोई संस्था पंजीकृत नहीं है। इसके बावजूद मून राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बैनर लेकर कार्यक्रम आयोजित करते हैं और पत्रकार वार्ता करते हैं।

लोकसभा चुनाव की सरगर्मियों के बीच जनार्दन मून ने 23 मार्च को शाम 04 बजे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बैनर लगाकर नागपुर में पत्रकार वर्ता आयोजित कर कांग्रेस को समर्थन देने की घोषणा की। उन्होंने कहा था कि संघ इस साल के चुनाव में भाजपा को सत्ता से हटाने के कांग्रेस का समर्थन कर रहा है। साथ ही इस पत्रकार वर्ता का वीडियो यूट्यूब पर भी अपलोड किया। नतीजतन पूरे देश में यह भ्रम फैल गया कि संघ कांग्रेस के समर्थन में प्रचार कर रहा है। साथ ही इस वीडियो के आधार पर खबरें भी प्रकाशित की गईं।

प्रचार विभाग ने स्पष्ट किया है कि संघ की आधिकारिक जानकारी केवल उनके आधिकारिक ट्विटर हैंडल या वेबसाइट पर जारी होती है।

इस का संज्ञान लेते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने नागपुर पुलिस कमिश्नरेट में शिकायत दर्ज कराई है और जनार्दन मून के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। साथ ही संघ के नाम का इस्तेमाल कर हो रहे दुष्प्रचार को लेकर चुनाव आयोग से भी शिकायत की गई है। बहरहाल संघ ने आह्वान किया है कि संघ का राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। नतीजतन चुनाव के दौरान ऐसे फर्जी पोस्ट से सावधान रहें। संघ के प्रचार विभाग ने स्पष्ट किया है कि संघ की आधिकारिक जानकारी केवल उनके आधिकारिक ट्विटर हैंडल या वेबसाइट पर जारी होती है। ❑❑❑

अमेरिका में भी हिन्दी भाषा के प्रति बढ़ा लगाव

अमेरिका में हिन्दी का दबदबा बढ़ रहा है। पिछले दो साल के दौरान अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय भाषा के तौर पर हिन्दी विषय पढ़ाने वाले स्कूलों की संख्या दस गुना बढ़ गई है। अब 90 स्कूलों में हिन्दी के पाठ्यक्रम, चल रहे हैं। हिन्दी के छात्रों की संख्या भी बढ़कर 14 हजार हो गई है।

प्रसिद्ध सिलिकॉन वैली के सरकारी स्कूलों में अगस्त से हिन्दी वैश्विक भाषा पाठ्यक्रम शुरू होगा।

पहली बार हिन्दी को वैश्विक भाषा का दर्जा दिया गया है।

अमेरिका में हिन्दी को बढ़ावा देने वाली संस्था आईएएपीएच के अनुसार डलास और ह्यूस्टन समेत डेढ़ दर्जन शहरों के स्कूलों में अगले सत्र से हिन्दी के विषय शुरू होंगे।

हार्वर्ड, येल, प्रिंस्टन जैसे 12 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अलग विभाग संचालित किया जा रहा है। दो साल पहले तक अमेरिका के 6 विश्वविद्यालयों में ही हिन्दी का विभाग संचालित होता था। ❑❑❑

बाबूलाल मसीह और उसकी पत्नी सखी ने करवाया कन्वर्जन

सागर। न्यायालय सप्तम अपर सत्र न्यायाधीश किरण कोल की अदालत ने कन्वर्जन के प्रयास के एक मामले में आरोपी पति-पत्नी को 2-2 साल की सजा व 25-25 हजार रुपए जुर्माने की सजा से दंडित किया है। आरोपी दंपती ने युवक को ईसाई धर्म अपनाने पर नौकरी के अलावा 20 हजार रुपए प्रतिमाह देने का लालच दिया था। मामला शहर के कैंट थाना क्षेत्र का है। आरोपी आवेदक की पत्नी के रिश्तेदार हैं। ईसाई धर्म न अपनाने पर पत्नी को छोड़ने का दबाव बना रहे थे। कोर्ट ने मामले में अभियोजन पक्ष द्वारा पेश साक्ष्य सबूतों व गवाहों के आधार पर मध्य प्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम 2021 की धारा 3 व सहपठित धारा 5 के तहत सजा व जुर्माने से दंडित किया है। मामले की पैरवी करने वाले अपर लोक अभियोजक रमन कुमार जारोलिया ने बताया कि धर्मांतरण के केस में सजा व अधिकतम जुर्माने का सागर में संभवतः यह पहला मामला है।

अपर लोक अभियोजक जारोलिया के अनुसार 40 वर्षीय आरोपी रमेश पिता बाबूलाल मसीह तथा 40 वर्षीय उसकी पत्नी सखी निवासी विवेक नगर भैंसा थाना कैंट पर आरोप है कि दोनों ने 18 अक्टूबर 2021 एवं उसके पूर्व भैंसा में फरियादी अभिषेक को ईसाई धर्म अपनाने पर नौकरी व 20 हजार रुपए प्रतिमाह देने और ईसाई धर्म स्वीकार न करने पर उसकी पत्नी को फरियादी के साथ न भेजने का दबाव बना रहे थे। आरोपी उसकी पत्नी को भी ईसाई धर्म अपनाने को कहते थे। जिससे वह भयभीत था। आरोपियों ने उस पर मानसिक दबाव बनाया। जिस पर अभिषेक ने मामले की कैंट थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। कोर्ट में चालान पेश होने के बाद सुनवाई चली।

कोर्ट ने माना कि रमेश व सखी ने अभिषेक को न सिर्फ धर्म कन्वर्जन करने के लिए प्रलोभन दिया व दबाव डाला है, बल्कि उसकी पत्नी व अन्य को भी ईसाई धर्म अपनाए जाने के लिए प्रोत्साहित किया है। ऐसी दशा में आरोपी रमेश एवं सखी को अधिनियम की धारा 3 सहपठित धारा 5 के अधीन 2-2 वर्ष के सश्रम कारावास एवं 25-25 हजार रुपए अर्थदंड से दंडित किया जाता है। अर्थदंड की राशिजमा न किए जाने पर उन्हें व्यतिक्रम में 6-6 माह का अतिरिक्त श्रम सा कारावास भुगताया जाएगा।

अपर लोक अभियोजक जारोलिया ने बताया कि इस अधिनियम की धारा 3 में अधिकतम 5 साल तक की सजा का प्रावधान है। कोर्ट ने इस केस में अधिकतम 25 हजार का जुर्माना दोनों पर अलग-अलग लगाया है। कोर्ट ने इस अपराध को क्षमा योग्य नहीं माना।

आरोपियों की तरफ से पैरवी करने वाले वकील ने तर्क दिया कि वह प्रथम अपराधी हैं। उनकी उम्र 40 वर्ष है और यदि उन्हें कारावास की सजा दी जाती है तो उनके भविष्य पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा, इसलिए उनके प्रति नरम रुख अपनाया जाए। अभियोजन पक्ष के वकील ने कहा कि आरोपी पति-पत्नी ने आवेदक और उसकी पत्नी को कन्वर्जन करने का दबाव बनाया। इसके पुख्ता प्रमाण हैं। दोनों को सजा मिलनी चाहिए।

❑❑❑

शहडोल की बेटी ने सात समंदर पार बजाया भारत का डंका
कराटे चैम्पियनशिप में मलेशिया से जीत लाई ब्रान्ज

आदिवासी बाहुल्य जिले शहडोल के एक छोटे से गांव में रहने वाली आरती तिवारी ने सात समंदर पार जाकर अपने प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश का नाम रोशन किया है। आरती ने मलेशिया में कराटे चैम्पियनशिप में ब्रान्ज मेडल जीतकर विदेश में भारत का डंका बजा दिया।

एक छोटे से गांव गोरतारा की निवासी आरती तिवारी ने महज 13 की उम्र से कराटे सीखना शुरु किया था। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र के छोटे से गांव की इस बेटी ने अब सात समंदर पार निकलकर मलेशिया में अपनी कला के हुनर से भारत का मान बढ़ाया है। हाल ही में एक इन्विटेशनल टूर्नामेंट में हिस्सा लेने आरती मलेशिया गई थीं, जहां उन्होंने 13वें साइलेंट नाइट कराटे कप टूर्नामेंट में भाग लेकर सीनियर वर्ग 18 प्लस के टूर्नामेंट में आरती ने 55 किलोग्राम बेट पर ब्रान्ज मेडल जीता है। साथ ही महिला टीम ने भी इस टूर्नामेंट में श्रीलंका, जापान, यमन जैसे देशों को हराकर ब्रॉन्ज मेडल जीता है।

❑❑❑

बाल प्रश्नोत्तरी-11

?

जीतें पुरस्कार बाल मित्रों नवम्बर का अंक पढ़ने के पश्चात निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर अपने उत्तर सीट में भरकर **9522525363** पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम शाश्वत हिन्दू गर्जना में प्रकाशित किये जाएगें तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरस्कृत भी किया जायेगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल किशोर ही भाग ले सकते है। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि 25 अप्रैल 2024**

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ.केशव बलिराम हेडगेवार की जयंती कबआती है?

(1) माघ शुक्ल एकादशी (2) वैशाख कृष्ण पंचमी (3) फाल्गुन कृष्ण द्वितीया(4) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा

प्र.2 भारतीय नवसम्वत्सर हिन्दू नववर्ष का प्रारम्भ कब से होता है?

(1) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (2) चैत्र शुक्ल तृतीया (3) चैत्र कृष्ण प्रतिपदा (4) माघ कृष्ण प्रतिपदा

प्र.3 भगवान महावीर जैन धर्म के किस क्रम के तीर्थंकर थे?

(1) 22वें (2) 26वें (3) 24वें (4) 8वें

प्र.4 पुण्य श्लोक देवी अहिल्याबाई होलकर का 31 मई 2024 से कौन सा जयंती वर्ष प्रारम्भ हो रहा है?

(1) 305वां (2) 300वां (3) 400 (4) 350

प्र.5 लोक सभा चुनाव 2024 कितने चरणों में सम्पन्न होंगे?

(1) चार चरण (2) छः चरण (3) नौ चरण (4) सात चरण

प्र.6 मध्यप्रदेश में पेसा कानून कब से लागू है ?

(1) 15 नवम्बर 2021 (2) 15 नवम्बर 2022 (3) 15 नवम्बर 2023 (4) 15 नवम्बर 2024

प्र.7 मिशन गगनयान के लिये कितने अंतरिक्ष यात्री चुने गये है?

(1) तीन (2) चार (3) पांच (4) आठ

प्र.8 सिख धर्म के पांचवे गुरु कौन है?

(1) गुरु नानक देव (2) गुरु अगंद देव (3) गुरु गोविंद सिंह (4) गुरु अर्जुन देव

प्र.9 जबलपुर में रानीदुर्गावती की कितनी फिट ऊँची प्रतिमा स्थापित होने जा रही है?

(1) 52 फिट (2) 53 फिट (3) 58 फिट (4) 62 फीट

प्र.10 पृथ्वी का कितने प्रतिशत हिस्सा पानी ढंका हुआ है?

(1) 52 प्रतिशत (2) 72 प्रतिशत (3) 61 प्रतिशत (4) 71 प्रतिशत

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें।

(बाल प्रश्नोत्तरी- 12)

(कृपया अपनी पासपोर्ट साईज की फोटो भी व्हाट्सएप करें)

1.(   ) 2.(   ) 3.(   )

4.(   ) 5.(   ) 6.(   )

7.(   ) 8.(   ) 9.(   )

10.(   )

नाम...

पिता का नाम ....

उम्र .... पूर्ण पता ....

....

पिन .... जिला.....................

मोबाईल नं...................................

बाल प्रश्नोत्तरी- 11 के परिणाम

पूर्णिमा द्विवेदी

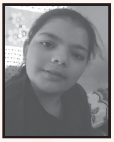
पूर्ति ववेले

सिद्धी उपाध्याय

आदित्री बोपचे

सौम्या सिंह परिहार

1. पूर्णिमा द्विवेदी - गुनौर, पन्ना
2. पूर्ति ववेले - मोहनगढ़, टीकमगढ़
3. सिद्धी उपाध्याय - दमोह
4. आदित्री बोपचे - वारासिवनी, बालाघाट
5. सौम्या सिंह परिहार - छतरपुर
6. जय सूर्या कुशवाहा - सागर
7. लवी मिश्रा - रीवा
8. अंकुश साहू - जबलपुर
9. इक्छिका सूर्यवंशी - छिंदवाड़ा
10. शिवांश कोशी - सतना

प्रथम 5 विजेताओं को पुरुस्कार भेजे जा रहे हैं:–

सही उत्तर:– 1 (2), 2 (3), 3 (1), 4 (1), 5 (3), 6 (1), 7 (4), 8 (3), 9 (3), 10 (1)

सुभाषित

अस्थिरं जीवितं लोके
अस्थिरे धनयौवने।
अस्थिरारू पुत्रदाराश्र्च
धर्मकीर्तिद्वय स्थिरम् ॥

॥ भावार्थ ॥

इस जगत में जीवन सदा न रहने वाला है,
धन और यौवन भी सदा न रहने वाले हैं,
पुत्र और स्त्री भी सदा न रहने वाले हैं।
केवल धर्म और कीर्ति ही सदा रहने वाली हैं।

पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई होलकर का 300वाँ जयंती वर्ष

15 से 17 मार्च तक रेशिमबाग नागपुर में सम्पन्न हुई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अ.भा. प्रतिनिधि सभा में सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने अपना वक्तव्य जारी किया उन्होंने बताया कि- 31 मई, 2024 से देवी अहिल्याबाई होलकर का 300 वाँ जयंती वर्ष प्रारंभ हो रहा है। उनका जीवन भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम पर्व है। ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले सामान्य परिवार की बालिका से एक असाधारण शासनकर्ता तक की उनकी जीवनयात्रा आज भी प्रेरणा का महान स्रोत है। वे कर्तृत्व, सादगी, धर्म के प्रति समर्पण, प्रशासनिक कुशलता, दूर दृष्टि एवं उज्ज्वल चारित्र्य का अद्वितीय आदर्श थीं।

श्री शंकर आज्ञेवरुन (श्री शंकर जी की आज्ञानुसार) इस राजमुद्रा से चलने वाला उनका शासन हमेशा भगवान् शंकर के प्रतिनिधि के रूप में ही काम करता रहा। उनका लोक कल्याणकारी शासन भूमिहीन किसानों, भीलों जैसे जनजाति समूहों तथा विधवाओं के हितों की रक्षा करनेवाला एक आदर्श शासन था। समाजसुधार, कृषिसुधार, जल प्रबंधन, पर्यावरण रक्षा, जनकल्याण और शिक्षा के प्रति समर्पित होने के साथ साथ उनका शासन न्यायप्रिय भी था। समाज के सभी वर्गों का सम्मान, सुरक्षा, प्रगति के अवसर देने वाली समरसता की दृष्टि उनके प्रशासन का आधार रही।

केवल अपने राज्य में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण देश के मंदिरों की पूजन-व्यवस्था और उनके आर्थिक प्रबंधन पर भी उन्होंने विशेष ध्यान दिया। बद्रीनाथ से रामेश्वरम तक और द्वारिका से लेकर पुरी तक आक्रमणकारियों द्वारा क्षतिग्रस्त मंदिरों का उन्होंने पुनर्निर्माण करवाया। प्राचीन काल से चलती आयी और आक्रमण काल में खंडित हुई तीर्थयात्राओं में उनके कामों से नवीन चेतना आयी। इन बृहद कार्यों के कारण उन्हें 'पुण्यश्लोक' की उपाधि मिली। संपूर्ण भारतवर्ष में फैले हुए इन पवित्र स्थानों का विकास वास्तव में उनकी राष्ट्रीय दृष्टि का परिचायक है।

पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई की जयंती के 300 वें वर्ष के पावन अवसर पर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए समस्त स्वयंसेवक एवं समाज बंधु-भगिनी इस पर्व पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में मनोयोग से सहभाग करें। उनके दिखाये गए सादगी, चारित्र्य, धर्मनिष्ठा और राष्ट्रीय स्वाभिमान के मार्ग पर अग्रसर होना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ❑❑❑

राष्ट्र सेविका समिति ने कराया निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण व चिकित्सा शिविर

जबलपुर । राष्ट्र सेविका समिति की प्रेरणा से देश भर में सेविकाओं द्वारा निः स्वार्थ भाव से सेवा कार्य का संचालन किया जा रहा है। इसी कड़ी में जबलपुर महानगर के रानी दुर्गावती नगर में भी चिकित्सा शिविर लगाया गया। यह शिविर पंडित जगमोहन शर्मा निवास में 'वंदनीय लक्ष्मीबाई केळकर सेवा समिति' के तत्वावधान में राष्ट्र सेविका समिति की ओर से निःशुल्क लगाया गया। इस शिविर में आए 255 रोगियों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें दवाएं वितरित की गईं। साथ ही गम्भीर समस्या से ग्रसित रोगियों को परीक्षण के पश्चात अस्पताल भेजा गया।

22 चिकित्सकों ने दी सेवाएं : 13 मार्च को इस शिविर का शुभारंभ ज्योतिषाचार्य अरुण शर्मा के करकमलों द्वारा भारत माता के सामने दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इस शिविर में 22 चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं दीं। इनमें सुख सागर मेडिकल कॉलेज व हॉस्पिटल की निदेशक डॉ. कवनीत खन्ना, स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. निशा साहू, डॉ. रितू नेमा, डॉ. प्रगति, एम.ओ. डॉ. विशाखा सिंह, चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ .मोहिनी चतुर्वेदी, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. मुद्रा खरे, मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉ. रेनू पांडे, नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. आलोक मिश्रा व उनके सहयोगियों सहित जनरल मेडिसिन डॉ. विवेक तिवारी और ऑपरेशन मैनेजर डॉ. वेद त्रिपाठी उपस्थित रहे। शिविर के व्यवस्थित संचालन के लिए 50 बहनें व बंधुगण व्यवस्था में लगे हुए थे। इस दौरान प्रांत प्रचारिका सुश्री वसुधा सुमन व प्रांत सेवा प्रमुख डॉ. क्षमा मांडवीकर विशेष रूप से उपस्थित रहीं।

❑❑❑

'समरसता' रणनीति नहीं, निष्ठा का विषय है : दत्तात्रेय होसबाले

दत्तात्रेय होसबाले पुनः सरकार्यवाह चुने गये

सामाजिक समरसता यह संघ की रणनीति का हिस्सा नहीं है वरन यह निष्ठा का विषय है। सामाजिक परिवर्तन समाज की सज्जन-शक्तियों के एकत्रीकरण और सामूहिक प्रयास से होगा। सम्पूर्ण समाज को जोड़कर सामाजिक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ने का संघ का संकल्प है। यह जानकारी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पुनर्निर्वाचित सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले ने 17 मार्च को प्रतिनिधि सभा स्थल में आयोजित प्रेस वार्ता में दी।

रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा की ऐतिहासिक घटना से समाज के सक्रिय भागीदारी का व्यापक अनुभव सबने किया है।

संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में श्री दत्तात्रेय होसबाले जी का सर्वसम्मति से अगले तीन वर्ष (2024-2027) के लिए सरकार्यवाह के रूप में निर्वाचन हुआ।

श्री होसबाले ने कहा कि चुनाव देश के लोकतंत्र का महापर्व है। संघ के स्वयंसेवक सौ प्रतिशत मतदान के लिए समाज में जन-जागरण करेंगे।

समाज में इसके संदर्भ में कोई भी वैमनस्य, अलगाव, बिखराव या एकता के विपरीत कोई बात न हो। इसके प्रति समाज जागृत रहे। संघ का कार्य देशव्यापी राष्ट्रीय अभियान है। हम सब एक समाज, एक राष्ट्र के लोग हैं। सपूर्ण समाज संगठित हो, यही संघ का स्वप्न है। पर्यावरण की रक्षा, सामाजिक समरसता- ये किसी एक संगठन का अभियान नहीं, वरन पूरे समाज का है।

अल्पसंख्यक मुद्दे पर संघ के सरकार्यवाह ने कहा कि हम माइनॉयरिटिज्म पोलीटिक्स का विरोध करते हैं। द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी के काल से लेकर अब तक के सभी सरसंघचालकों ने मुस्लिम और ईसाई नेताओं से संवाद कर समन्वय बनाने का काम किया है।

पिछले दिनों मणिपुर में जो सामाजिक संघर्ष हुए, वह बहुत ही पीड़ादायक है। यह घाव बहुत गहरे हैं। कुकी और मैतेयी समुदाय में संघ का काम होने से हमने दोनों समुदायों के नेताओं से संवाद कर परिस्थिति को सामान्य करने के प्रयत्न किये, जिसमें सफलता भी मिली।

छह सहसरकार्यवाह निर्वाचित : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नई कार्यकारिणी में माननीय सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले द्वारा 2024-27 के कार्यकाल हेतु छह सहसरकार्यवाह निर्वाचित हुए।

डॉ. कृष्ण गोपाल

श्री मुकुंद सी. आर.

श्री अरूण कुमार

श्री रामदत्त चक्रधर

श्री अतुल लिमये

श्री आलोक कुमार

प्रतिष्ठा में,

प्रकाशक एवं मुद्रक नरेन्द्र जैन द्वारा विश्व संवाद केन्द्र महाकौशल न्यास, प्लॉट नं. 1692, नव आदर्श कॉलोनी के लिए ग्रेनेडियर्स एसोसिएशन प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर द्वारा मुद्रित प्रकाशन स्थान विश्व संवाद केन्द्र, प्लॉट नं. 1692, नव आदर्श कॉलोनी, गढ़ा रोड, जबलपुर मध्य प्रदेश दूरभाष 0761-4006608, संपादक -डॉ. किशन कछवाहा